বিজয় শঙ্খ



...ডা॰ মৈথিলী লেখক সম্মেলন
...লী সমিতি. দরভঙ্গা

विजय-शङ्ख

[जनजागरण संबंधी मैथिली कविता]

सम्पादक

श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर'

प्रकाशक

अखिल भारतीय मैथिली लेखक सम्मेलन

वैदेही समिति : दरभंगा

प्रकाशक
श्रीकृष्णकान्तमिश्र, मंत्री,
अ० भा० मैथिली लेखक सम्मेलन
वैदेही समिति : दरभंगा

१९६५ : गणतंत्र दिवस
मूल्य एक टाका

मुद्रक
श्रीपीताम्बरझा
जनक छापाघर, दरभंगा



संचार तथा संसदीय कार्य मंत्री, भारत
MINISTER OF COMMUNICATIONS
AND PARLIAMENTARY AFFAIRS
नई दिल्ली
NEW DELHI
मार्च २०, १९६४

दिल्ली [illegible] मैथिली [illegible] [illegible] के मैथिली [illegible] भारत में हिन्दी आदि [illegible], बंगला, तमिल, तेलुगु आदि [illegible] सम्मानित स्थान प्राप्त नहि ।

जनवरी १९४७ में आयोजित [illegible] अखिल भारतीय मैथिली लेखक सम्मेलन के, अपना ढंगक महत्वपूर्ण [illegible] विशिष्ट स्थान प्राप्त भेल छैक, द्वितीय अधिवेशनक अध्यक्षताक सौभाग्य हमरा प्राप्त भेल छल ।

चीनी आक्रमण [illegible] देशक कण-कण में [illegible] छल वा सकैत [illegible] राष्ट्रिय भावनाक [illegible] सम्पूर्ण देश में [illegible] । ओहि अधिवेशनक अवसर पर मैथिली [illegible] राष्ट्रिय [illegible] मैथिली [illegible] साहित्यकार [illegible] मैथिली भाषा में उच्चकोटिक साहित्यक निर्माण [illegible] राष्ट्र-आह्वान [illegible] देश में [illegible] भारतीय भाषा [illegible] नहि [illegible] ।

प्रस्तुत [illegible]-संकलन में उक्त अधिवेशन में आयोजित कवि सम्मेलन में पठित जे समर्पित कविता सब राखल गेल अछि । मिथिलाक [illegible] साहित्यकार कविवर श्री [illegible], कवि चूडामणि श्री काशीकान्त मिश्र 'मधुप' [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] किशोर [illegible], [illegible] [illegible] में [illegible] मैथिली भाषा में [illegible] प्रतिभा एहि संकलन में [illegible] प्राप्त [illegible] ।

[illegible] विश्वास अछि जे प्रस्तुत संकलन राष्ट्रिय [illegible] भावना निर्माण में महत्त्वपूर्ण स्थान ग्रहण करत आ मैथिली [illegible] यथार्थ साहित्य निर्माण दिस अग्रसर होएत रहताह ।

हम एहि प्रकाशनक हार्दिक [illegible] करैत छी ।

[illegible]
[illegible]
अखिल भारतीय मैथिली [illegible] सम्मेलन,
[illegible]

सूची

कविसम्मेलन विभागाध्यक्ष कविचूड़ामणि पण्डितश्रीकाशीकान्तमिश्र 'मधुप'क अभिभाषण

जयति जानकी-जन्मभूमि, जगती-जनजनक-जनक आवास
कण्ठ-कण्ठ सँ गीत कर्ण-गत, जै ठाँ कोकिल-गीतक भास ॥
धन्या कन्या जनिक, सहसमुख मारल रणचण्डिक धऽ रूप ।
ध्यान करी तनिके, जनिका मस्तकपर हिमगिरि मुकुट अनूप ॥

समागत-विविध-विद्या-वारिज-मिलिन्द-सज्जनवृन्द !

एवम्

कमनीय-कविता-कमलिनी-नायक, दुर्मद-दुष्ट-दल-दलन वीर-रौद्र-भयानक-शायक-कवि-कदम्ब !

मानवीय-विकट-वेदना-वह्नि जखन वैखरीक रूप लेलकैक तँ कविता-कुमारी क्रान्ति-किरीट पहिरि तमसा-तट पर तमसाऽवृत व्याधक बाण सँ विद्ध भऽ आहत-काम-क्रीड़ा-रत-क्रौञ्चक किशोरिक करुण-क्रन्दनक सङ्ग 'मा निषाद ! प्रतिष्ठान्त्वमगमः' बनि लौकिक-सीमा केँ पार कऽ आदि कविक सार्वभौमिक मूर्तरूप देवाक निमित्त हाहाकार कऽ उठल ।

व्यक्तिक अनुभूति जखन विश्वात्मक अनुभूतिक सङ्ग एकाकार भऽ जाइत छैक, तँ ओ कवि बनि 'कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूः'

एहि उपनिषद्वाक्य केँ सार्थक करैछ 'आ' तै समाधि अवस्थाक ईश्वर-प्रदत्त ई स्वर कविता कहबैत अछि।

तथाकथित ताहि कवित्व-शक्तिक तटनीक तीरहुँसँ अति दूर हमरा सन व्यक्तिक माथपर एहि सम्मेलनक अध्यक्षतासँ सनाथ हैवाक भार देब, विद्वत्समाजक हेतु आभारजनक बुझितहुँ, विज्ञ-मण्डलीक आज्ञा-लोकेर अवज्ञा-जन्य अपराधसँ बचबाक निमित्त पूज्य-पण्डित-वर्गक मन्त्रसँ प्राणप्रतिष्ठा पौने पाथरक प्रतिमे जकाँ अप्रतिष्ठित रहितहुँ एहि पूज्य-पदपर प्रतिष्ठित भेल, आदेश-पालन-जनित आनन्दक अनुभव करैत एवं कृतज्ञताक भारसँ अपस्याँत होइत मैथिली-काव्य-सम्बद्ध-विषयक चर्चा द्वारा अपने लोकनिक समर्चा कै रहलहुँ अछि।

सङ्कटापन्न, प्रपञ्च-मञ्चस्थित चीनीक्रान्ति सँ विपन्न, स्वार्थ-साधनरत दूषितसिद्धान्तवादि-कटुकीट-सम्पर्कें समुत्पन्न, विश्व-सूत्रपात-उत्पात-विधायक एहि वातावरणमे अनेक सहस्रवर्ष पूर्वक अजस्र रूपें प्रवाहित जनक-याज्ञवल्क्य समयक उपनिषद्वाक्य स्वरूप उच्छलतरलतरङ्गभङ्गी-समलङ्कृत, तीरभुक्तिक काव्यधारा क प्रथम दर्शन दर्शनविहीन हमरा सन विषयलीन-व्यक्तिकें सम्भव कतै ?

जकर साह्लाद आस्वाद कऽ औखन संसार नतमस्तक अछि।

तकर बाद आठमशताब्दी सँ तेरहम शताब्दी धरि सिद्ध-लोकनिक प्रसिद्ध-पद-मध्य एवं कीर्तिलता, कीर्तिपताकामे मैथिली काव्यक प्राणरूप दृष्टिगोचर होइछ।

यद्यपि चर्यापद, वज्रगीति, मुक्तक, दोहा, अर्धाली, एहि पाँच प्रभेदेँ कविता लिखनिहार सिद्धलोकनिकेँ अपनाबक हित बङ्गाली प्रभृति उदारचेता लोकनि पूर्ण प्रयत्नशील रहला, मुदा हुनका लोकनिक भाषाक्रम 'आ' उक्तिविधानसँ विश्वस्त छी जे चौरासी सिद्धमे सँ बहुतो मैथिले छथि ।

विद्यापतिसँ पूर्व हमरा लोकनिक काव्यक रूपरेखाक अनुमान सिद्ध लोकनिक पद, ओ अवहट्ट काव्यसँ लगा सकैत छी । हँऽ गद्यकार रहितहुँ कान्त-कल्पना, अनुभूतिक विभूति, व्यापक वर्णनचमत्कार आदि दृष्टिएँ ज्योतिरीश्वरक ज्योतिए सँ मैथिली संसारमे शब्दशिल्पिता प्रकटित भेल ।

तकर बादे भक्ति-भावना-भागीरथी-स्नात, कोमल-कान्त-कल्पना-कलित, ललित-पदावली-पद्म-पराग-पूजित-कविकोकिल-विद्यापति सन कलाकार पाबि ई भाषा-सीमन्तिनी सर्वाङ्गसुन्दरी बनि गेलि ।

जे शृङ्गार-रसक महान् कवि होइतहुँ कुरीतिकाननकेँ दग्ध करबाक निमित्त 'हम नहि करब एहेन वर माई' आदि अनेको अङ्गार स्वरूप गीतक सर्जन कैल । ततबे नहि मैथिली-मधु-माधुरी स्वादन-धुरीण, कविकोकिल अभिनव जयदेव जे एकटा ज्योतिर्मय वाक्य कहि गेला—'देसिल बयना सब जन मिठ्ठा" से युग युग धरि संसारकेँ आलोक दैत रहत । कविकुलगुरुविद्यापति ओहि कालक परम्पराक बान्हकेँ तोड़ि अपार वेगसँ जनभूमि पर अपन कविताधारा प्रवाहित कैलनि ।

हिनके सङ्गीत-सुधा-संवलसँ प्रवल भक्त पाबि गोविन्ददास, रामदास, लोचन, उमापति, नन्दीपति, रत्नपाणि प्रभृति सँ लऽ कऽ हर्षनाथ, लक्ष्मीनाथ, कवीश्वर चन्दाझा पर्यन्त गीतकार लोकनि गामगामक कण कणमे अपन स्वर छोड़ि गेलाह।

विद्यापति 'आ' हर्षनाथ एहि दूहू कविक भावधारा-समन्वयनक सेतु स्वरूप महाकवि मनबोधक कृत कृष्णजन्मक कमनीयता ककरा हृदयकेँ आकृष्ट नहि करैछ ?

चन्दाक चारु-चन्द्रिका-चर्चित एहि भाषाक जीवनझा, रघुनन्दनदास, लालदास, सीतारामझा, छेदीझा, पुलकितलाल दास 'मधुर' यदुनाथझा 'यदुवर' प्रभृति अनेको महान् कवि लोकनि अपन अपन कृतिकुसुमसँ अर्चना कैलनि।

अपन भाषाक प्रथम राष्ट्रिय चेतनाक गीतसङ्कलन यदुवरजी द्वारा सम्पादित भऽ १९२० मे प्रकाशित भेल। आ' भाषाक पहिल ओजस्वी मासिक पत्र महामहोपाध्याय मुरलीधरझाजी द्वारा सम्पादित १९०६ मे प्रकाशमे आयल।

तकर बाद स्वर्गीय मिथिलेश रमेश्वरसिंहक अनुकम्पा स्वरूप साप्ताहिक "मिथिलामिहिर" बहुतो दिन धरि लेखक ओ कवि लोकनिक अवलम्बन रहल। जकर अन्तिम सम्पादक पं० श्री सुरेन्द्रझा "सुमन"क साहित्य-सेवा ओ लेखक-कवि गढ़बाक कला सँ मैथिली भण्डारमे बहुतो रत्न जगमगा रहल अछि।

आधुनिक दृष्टिसँ सजल धजल, रमानाथ बाबू द्वारा सम्पादित 'साहित्य पत्र' १९३७ मे प्रकाशित भेल। जाहि मे धारावाही

रूपें प्रकाशित आदरणीय गुरुवर कविशेखरजीक एकावली परिणय महाकाव्य, तन्त्रनाथ बाबू रचित कीचकवध महाकाव्य आदि ग्रन्थ लोकक लोचनकें तृप्त कैलक ।

आइ तँ अपना भाषाकें पद-पद्म-विभूषासँ भूषित करबाक प्रेममे कतेको कवि नवनव भावना व्यक्त कऽ रहल छथि । जकर प्रभावें भाषान्तरो प्रभावित भऽ डाइन जकाँ योग टोन करबामे बाज नहि अबैछ । मुदा साधक समुदायक एहि सिद्धभूमिमे ओ सब स्वयं समाप्त भऽ जायत ।

खेद एकटा बातक अवश्य, जे कविता क्षेत्रमे प्रगतिकें देखि कतेको व्यक्ति बाजि उठैत छथि जे मैथिलीमे बहुतो कवि फड़लाह अछि । आ कविता लीखब सुगम भऽ गेल अछि ।

किन्तु स्मरण राखक थीक जे जाहि ठामक लोक सोहर सुनि नयनोन्मेष करैत अछि, आ नचारी सुनि महाप्रयाण, जइ ठामक सरिता आकाशचित्र हृदयमे प्रतिबिम्बित करैत प्रतिपल गबैत अछि, ओ जै ठाँ बगड़ाक चुनचुनिओंमे एकटा आह्लाद छैक, तै ठामक लोकक आन्तरिक उद्रेक कवितेक रूपमे हैब कोन आश्चर्यक विषय ?

हमरा तँ ई कहैत परम गौरव आ अपार हर्षोद्गार होइत अछि जे एहि दू दशकमे मैथिली कविताक जतेक प्रगति भेल अछि, जाहि रूपें ऐ ठामक चिन्तनधारा कविताक रूपमे प्रवाहित भेल अछि, भरिसक्के आन कोनो भारतीय भाषामे एतेक विभिन्नस्वर एक स्वरें निनादित भऽ सकल हो ।

मैथिलीक वर्तमान युगक कवि लोकनि तँ सोद्गार अङ्गारपर चलैत रहलाह। अपने देशक संविधानक स्वर्णिम पृष्ठमे स्थानपैबा सँ वञ्चित, प्रेस, प्लेटफार्म, पैसा, पेशा, पेशकार आ' सरकार सँ ठोकरौल भाषाक कवि प्रतिक्षण संघर्षशीले रहलाह।

आ जनभावनाक पुण्यसँ प्रमत्त भेल हुनके अन्तःकरणक 'मधुप' प्रतिपल तीक्ष्णकाँटसँ लहूलुहान भेल आँट रहितहुँ गुञ्जार करितहिं रहलाह।

हुनका लोकनिक स्वर यद्यपि जीवनक विभिन्न हिलोर केँ स्पर्श करैत रहल, मुदा संघर्षक असंख्य शंखनाद तार ध्वनि सँ जनजीवन केँ अनुप्राणित करिते रहल।

जकर प्रमाण स्वरूप मैथिली साहित्य परिषद्, विद्यापति-गोष्ठी, शतदलसाहित्य संघ, मैथिल संघ, चेतनासमिति, मैथिली साहित्य सम्मेलन प्रभृति अनेको संस्था एवं वैदेही, मिथिलादर्शन, बटुक, पुनः प्रकाशित मिथिलामिहिर आदि पत्रपत्रिका तथा सुभद्राहरण महाकाव्य मैथिली व्याकरण, शतदल आदि अनेको पुस्तक पर पुरस्कार देनिहार ओ तत्तत् पुस्तक केँ अपना ट्रस्ट सँ प्रकाशित केनिहार बाबू श्रीकृष्णनन्दन सिंहजी (पुवारि ड्योढ़ी राघोपुर) सदृश सहृदय व्यक्तिक उदारता दृष्टिगोचर भऽ रहल अछि।

एहि वर्त्तमान युगक संघर्षशील कवि लोकनिक विचारधाराक तरल-तरङ्ग केँ तँ देखू—

भाषाक उपेक्षा सँ तिलमिलैल महाकवि सीताराम झा हुङ्कार

कऽ उठलाह—'पायब किछु अधिकार कतउ की बिना झगड़ने। अछि सलाइमे आगि बरत की बिना रगड़ने।' श्रीभोलालाल दास गर्राज उठलाह—"भूमिकम्प छीप्रबल विश्वविसवकारी हम" बन्धुबर श्री आरसी बाबूक आत्म-विश्वास हुंकारि उठल 'अभिनव विद्यापतिक भवानी जागि रहल अछि' तुरन्ते भुवनजी उत्तेजित भऽ कहि उठैत छथि—'गौरवक गर्व गढ़ ढाहि देब नहि क्षमा करब प्रतिशोध लेब, आ तखने कोनो कवि कराहि उठल—सहि सकै कते नर दरद तकर हम माप बनैत रहै छी, ओम्हर कोशीक-नग्ननृत्य कवि-हृदय पर आघात कैलक 'जनिक अन्नपूर्णा भसिऐले कौशिकीक मझधार' क्यो शोषितक कवि सामन्तशाहीकेँ नष्ट भ्रष्ट होइत देखि "भीमक गदा-बसाते उड़इत" कहि मस्त भऽ उठलाह। एक दिश जँ एक गोटे कहलनि—मधुमयी हम मैथिली तँ दोसर दिस गोइठ बिछनी बालिका क मुँह माइक गोटी सँ दागल' चित्र क्यो उपस्थित कैलनि, एम्हर मातृभूमिक रक्षाक निमित्त क्यो ललकारि उठलाह "सै सै गंगाजल सँ धोने नहिं छूटै इतिहासक दाग। एक बेर भू लुण्ठत भेने फेर चढ़ै नहिं माथा पाग॥" तावत कोनो कविक कोमल हृदय कहि उठल—'ओकरा करेजमे नहिं लगैत छै युगक धाह" एतबे में हाड़ टँड़ने हाड़ कहि क्यो कोनो कङ्काल स्वरूप दीनक प्रति संवेदना प्रगट कैल, क्यौ शोषित वर्गकेँ सावधान करैत कहलनि—रे दानव मंडल विधिक विधान परम चंचल अछि" की जननी आ जन्मभूमिक द्रोहीक प्रति ललकारा उठल—'से कपूत थिक'

स्नेहीबन्धु श्रीकिसुनजीक कलम दहाड़ि उठल—'लै उद्दाम प्रवाह प्रबल हम आबि रहल छी' की एतबे में घन घटा देखि क्यो गावि उठलाह 'कारी कारी बादरि आयल, एमहर कोनो युवकक कण्ठ स्वर झंकृत भऽ उठल—निहुरि निहुरि कृषक वधू काटि रहल धान रे तँ कोनो नवयुवक चन्ना आङन दीयाबाती, दीप जरै अछि पाँती पाँत गाबि उठलाह आ कोनो युवक कें कामाक चिन्ता भेलनि तँ कहि उठलाह 'आइ की भसतोह भुखले हमर सामा" क्यो जन मानस कें स्पर्श करैत कहलनि—चलु चलु बहिना जहिना छी तहिना" क्यो तिलतिल मातृभाषाक सेवा में वश लगले लद्दाख में वर्वर चीनीक दर्प दमन करवाक निमित्त भूमि उठलाह 'जन्मभूमि केर माटिक तिलक लगा" एम्हर घरक मोर्चा पर कवि 'रोपि रहल धान'क बाद मन सम्पय उपजल शान्तिक शीश छप-छप काटै लगलाह, तावत, लोकके जगबैत ककरो गुरु गर्जन सुनबा मे ऐल, बीभ लागि गेल छौ कृपाण कें पिजा। से नाना छन्द नाना स्वर आ" नाना भाव नेने मैथिली काव्यधारा प्रतिक्रियावादी कें डुबबैत जनभूमिके हरित, पल्लवित, पुष्पित ओ ऐश्वर्यमय करैत सतत बहैत रहल अछि जन-जागरणक महासागर दिशि।

मैथिलीक एतत् कालीन विभिन्न कविता-तरङ्गिणीक ललित लहरीके निहारि सम्प्रतिक युगके स्वर्णिम युग कहब अत्युक्ति नहि। किन्तु, विश्वसंघातक महान उत्पातक मूल अर्वाचीन चीनक क्रान्ति-झंझासँ सकम्प प्राचीन संस्कृतिक विधायक विश्वके

आध्यात्मिक तत्त्वदायक परम वृद्ध अपन भारतक रक्षाक हेतु आइ तँ हम समुपस्थित कवि मण्डलसँ करवद्ध प्रार्थना करब जे वर्तमान समय में समवेत सकल रसधाराकेँ वीर-रस सँ तरंगित कऽ तेना प्रवाहित करू जाहिमे पड़ि अखर्व-गर्व बर्बर चीनीक नामोनिशान नहि रहि पाबै। अहाँ लोकनिक विकराल कलमक सृष्टि हो जकरा ज्ञान दृष्टि सँ देखितहिं आबाल वृद्ध भारत सन्तान भैरब तान दैत—"जय जय भैरवि असुर भयाउनि पशुपति भामिनि माया" महामंत्रक नारा लगबैत शत्रुक संहार यज्ञ मे अपन प्राणक आहुति देबामें समर्थ हो। आइ 'भूषण ओ समर्थ दास' बनि अनेको शिवाजीक निर्माण बिना मन्दिरक घंटाध्वनि बन्द भऽ जायत। स्वच्छन्द स्वाहा स्वध क उच्चारण फन्दमे पड़ि जायत। सर्वदाक हेतु अपन स्वाधीनता देवी वन्दनीया रहितहुँ बन्दी बनि जेतीह। अतएव रौद्र अङ्गारसँ शृङ्गार कऽ विद्यापतिक प्रभावित महावीर शिवसिंहक भूमिकेँ कर्मभूमि बनाउ।

ई कहैत हम एहि सम्मेलनक संयोजक स्निग्ध श्रीकृष्णकान्त बाबूक कल्याण-कामना करैत जगदम्बासँ प्रार्थना करैत छी जे जाही प्रकारेँ एहि बिकट समयमे उत्कट बिघ्नबाधाक बीच रहितहुँ ई ऐ सम्मेलनकेँ सफल बनौल अछि, ताही प्रकारेँ सपरिवार चिरञ्जीवी रहि मिथिला मैथिल मैथिलीक समुन्नति दिशि ध्यान राखथु तथा अपन आदरणीय पिता महामहोपाध्याय जीक वरदहस्तच्छाया मे सुखी रहथु।

मङ्गलमयी-मैथिली-मायक मधुर मृदुल मुसुकान,
मन-मन्दिरमे राखि 'मधुप' सांप्रत अपन व्याख्यान।
सुना समय सहृदय-श्रोता समुदायक सम्प्रति लेल,
छमव नीर फेनोज्ज्वल बुधजन तकरा बूझि बलेल॥

———

सम्पादकीय वक्तव्य

देशके स्वतन्त्रता भेटलैक सत्य अहिंसाक नामपर आ एही आधारपर विश्वशान्तिक स्वप्नके साकार करबाक दिशामे भारतक जन-नेता कार्य लग्न रहलाह। अपन प्रतिवेशी देश सब सँ मैत्री ओ सौहार्द पूर्ण सम्बन्ध स्थापित करबाक प्रसङ्गमे बौद्धकालीन भारतक शिष्य चीन, गान्धी युगीन भारतक भाइ भाइक सम्बन्धमे आयल। स्व० नेहरू तथा चाउ एन लाइक परस्पर आलिंगन एही सम्बन्धके सुदृढ़ करबाक हेतु दिल्लीमे सम्पन्न भेल। बांडुंग सम्मेलनमे भारत पंचशीलक सिद्धान्त संसारक समक्ष उपस्थित कयलक। एहि सन्देश ओ सिद्धान्त के संसारभरिमे प्रसारित करबाक हेतु अग्रदूतक रूपमे चीन अपना के घोषित कयलक, किन्तु एही अऽढ़मे अपन साम्राज्य-विस्तार-लिप्साक पूर्तिमे लागल रहल आ टाङ पसारैत पसारैत १९६२ मे आबि अकस्मात् एहि देशपर आक्रमण कऽ बैसल।

एहि आक्रमणक फलस्वरूप भारतक सम्पूर्ण जन-जीवन आन्दोलित भऽ उठल। एहि प्रकारक विश्वासघातक प्रतिशोध स्वरूप भारतीयभाषा साहित्यमे एक लहरि उठि गेल। क्रोध, क्षोभ, प्रतिहिंसा, शौर्य, एकताक दृढ़ संकल्प आदि अनेक भाव साहित्यक माध्यमसँ मुखर होमय लागल।

मिथिला तँ युद्ध-सीमाक विशेष निकटक भू भाग छल। जय जय भैरवि असुर भयाउनि सन गीतक उद्गाता विद्यापतिक भूमि, विद्यापतिक भाषा कोना पछुआयल रहैत ?

द्वितीय लेखक सम्मेलन ओही समयमे संभावित छल। एक माश ओजमयी वाणीमे राष्ट्रिय पौरुषकेँ भिकझोरि जगयबाक हेतु मैथिली-भाषा-कवि लोकनिक आह्वान भेलनि। ओहि अवसर पर आयोजित कवि-सम्मेलनमे एहने ओजपूर्ण कविता सभक पाठ भेल जे सुनि बैरोलिया चैरेटी ट्रस्टक अधिकारी लोकनि अत्यन्त प्रभावित भेलाह। ओ ओही ठाम एहि कविता सभक संकलन प्रकाशित करबाक हेतु ट्रस्ट दिस सँ २५१) टाका देबाक घोषणा कयलनि। एही फल स्वरूप ई वीर रसात्मक कविता सभक एक संग्रह प्रस्तुत भऽ सकल अछि।

लेखक सम्मेलनक मन्त्री एकर सम्पादनक भार हमरा देलनि। हम अपना भरि सम्पादनमे जतय कतहु उचित बुझलहुँ, काट छाँट कऽ कविता सबकेँ उपस्थित कऽ रहल छी। सब कविताक स्तर एक संभव नहिं छल। राष्ट्रकेँ जागृत करबाक संगहि नवीन कवि लोकनिमे जागरण आनब आवश्यक छल ताही दृष्टि सँ ई प्रस्तुत भऽ रहल अछि।

हम ट्रस्टक अधिकारी तथा लेखक सम्मेलनक प्रति अपन कृतज्ञता ज्ञापित करैत छी जनिका लोकनिक उत्साह सँ ई संभव भऽ सकल। एहि संग्रहक प्रसंग केन्द्रीय संसदीयकार्य मन्त्री श्री सत्यनारायण सिंहजीक प्रति आभार प्रगट करैत छी जे अपन अमूल्य विचार दऽ उत्साहित कयलनि अछि।

गणतन्त्र दिवस, १९६५ ई०

श्रीचन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

मिश्रटोला, दरभङ्गा

उद्बोधन

वीरजन ! भूमिक विवादमे विवेक-सङ्ग
मीलि दुहू पक्ष, पक्षपात तजि बाँटि लियऽ ।
मानै यदि सङ्ख भै प्रपंच तजि पङ्ख कैं तँऽ
बखरा मे एक्को इञ्च भूमि नहिँ छाँटि लियऽ ॥
केयो पक्षपात सँऽ दबाबै कटु बात सँऽ तँऽ
मारि अहाँ लात सँ पछाड़ि कान काटि लियऽ ।
रूसि रूस-यूरप-अमेरिकादि मित्रहुँ सँऽ
चीनी कैं चटनी चढ़ाय चट चाटि लियऽ ॥

युवक सुधोर ! तीर-धनुष उठाउ, उठू
शीघ्र सीमावर्ती शत्रु सैनिक कैं मोड़ि दियऽ ।
भीति तजू कालहु सँऽ नीति अपनाउ नव
प्रीतिभाव रीति आब दुर्जन सँऽ छोड़ि दियऽ ॥

सोझाँ आबै शत्रु तँऽ पछाड़ि कै ससारि घेँट
पैसि चीन भूमि मे पहारहु कैं कोड़ि दियऽ।
फोड़ि दियऽ आँखि जँऽ कनेको भौंह टेढ़ करै
चाऊ-एन-लाईक किला कैं चढ़ि तोड़ि दियऽ॥

माला बैसि फेरू केयो भाला उठि फेरू केयो
शत्रुदल घेरू केयो वीरताभिमान सँऽ।
बलक विकास करू, सहित उल्लास भरू
राष्ट्रिय सुरक्षा कोष रक्त-हेम-दान सँऽ॥
सर्वथा छी रक्त महाकालिकाक भक्त चलू
शत्रु शिररक्त काटि कठिन कृपाण सँऽ।
बान्हि दृढ़ कक्षा करू रहित विपक्षा निज-
मातृभूमि रक्षा अहाँ बाजी राखि प्रान सँऽ॥

चाही यश सम्पत्ति समेत सुख जीवन तँऽ
आलस हँटाय काजपथ मे उतरि जाउ।
साधू निज लक्ष्य सुख-दुख कै समान मानि
मान-अपमान रागद्वेष कैँ बिसरि जाउ॥
उचित विचार हेतु, देश उपकार हेतु
सत्य स्वाधिकार हेतु कालहु सँऽ लड़ि जाउ।
पुरुषो कहाय चाही आनक सहायता तँऽ
घुट्ठी भरि पानि मे दहाय डूबि मरि जाउ॥

आनक सुधार करबाक अछि कामना तँऽ
छाड़ू उपदेश देव अपने सुधरि जाउ।
चाही भयहीन भै बिताबी जगजीवन तँऽ
शास्त्र प्रतिपादित अधर्म देखि डरि जाउ॥
झगड़ा सँ दूर रहबाक अभिलाष हो तँऽ
आत्मशत्रु काम-क्रोध-लोभ-सङ्ग लड़ि जाउ।
यदि वा युगान्त धरि जीवन अभीष्ट हो तँऽ
स्वार्थ त्यागि देश उपकार हेतु मरिजाउ॥

रणचण्डीक आह्वान

आइ अछि रणचण्डिक आह्वान।
अपन आन तजि भेद भाव, सद्भावनाक बनि कै प्रतीक,
चढ़ि चढ़ि उत्साह विमान,
मातृभूमि पर करक हेतु बलिदान,
दानवी शक्तिक संहारक ऐ' मख मे
बढ़ि चल बढ़ि चल चपल चालि सँ भारत केर जवान,
वान सँ बढ़ि चढ़ि सत्वर।

अरे! जकर कोरा मे द्वादश दर्शन केर निर्माण,
विश्वक सर्व प्रथम ग्रन्थ जकरे गूफा मे समाधिस्थ भै
वेद लिखल ब्रह्मर्षि लोकनि जै' सँ त्रिभुवन उत्थान
झङ्कृत जाहीठाम'सहनाववतु सहनौ भुनक्तु सहवीर्यं करवावहै'

आदि सन गान,
जे की अरब समुद्र वङ्ग उपसागर युग्म तराजुक
पल्लरा पर लै कै अपने मापदण्ड बनि,
नापि नापि सम्पूर्ण क्षितिक गुण सुर-सरिताक समान
अनेको सुता सहर्ष देल भारत कें, बुझि न अपर उपमान,
भारतीय राजर्षि मण्डली वाणप्रस्थवय बिताबैक हित
जाहि देवतात्माक निकट
सांसारिक उत्कट संकट टारथि, कै गंगोदक पान
भारतीय संस्कृतिक जनक तै साधु हिमालय कें अशान्ति दै
धाख छोड़ि लद्दाख आदि पर
राख बनक हित चीनी दानव दै रहलौक अड़ान।
तें तौं क्रान्ति मृदङ्ग बजा दे, थाप जकर सुनि
तन मन धन सँ भारतीय आबाल वृद्ध वनिता
सीमाकें करै सुरक्षित, एक एक इञ्चो क्षिति हेतुक
दिअय प्रेम सँ प्राण।

अरे भूमि झट चल सीमा पर,
युगक पिआसलि मातृभूमि कें
चोंनिक चीनी सनक स्वादु सोनित पिआय
बढ़ि पेकिङ्ग पर कर आधिपत्य उड़बैते 'ऐरोप्लान'।
तोहर पूर्ण प्रतीक्षा मे हर-ससुर भूमि मे

भीम गाण्डवी अपन अस्थिचय जोगा जोगा रखने छी
अही दिवस हित बान्धव वज्र सदृश
से शस्त्र उठा कै, कर न देरि अम्लान
अपन सर्वस्व लगाकै शत्रुक छाती तोड़ि ताड़ि
तो ँ तड़ित वेग सँ देखा विश्व के ँ
रामकृष्ण केर छी हम सब सन्तान,
सहि सकबे नहि शत्रु केर ललकार
लच्छ लच्छ हम कच्छ बान्हि
कै सौम्य लच्छ पर दच्छ,
विपच्छक पच्छ तोड़ि नित बच्छ तानि
झट चलब मर्चालि कै
बीरव्रतीक करैत हृदय सँ गुणगण गौरव गान

श्रीरामकृष्णझा 'किसुन

आक्रामक चीनसँ

आइ स्वदेशक बच्चा-बच्चा कयलक युद्ध-प्रयाण
शत्रुक मस्तक चाहि रहल अछि युवकक क्रुद्ध कृपाण
जागल अछि गांडीव अर्जुनक जागल रामक वाण
भीमक गदा सजग भऽ माँगय आइ विपक्षिक प्राण
गरजि रहल अछि आइ हिमालय गरजि रहल लद्दाख
गरजि रहल नेफा, रे चीनी कनिञे धैरज राख
लगले सरिपहुँ फुजतउ तोहर मद सँ मातल आँखि
चीनी चुट्टी जनमि गेलउ अछि मरबाकालक पाँखि
सम्यवाद केर खाल ओढ़ि कऽ करय अपन विस्तार
फुसिये इनकिलाब कहि शान्तिक कयलें तों संहार
सुतल सिंहकें कऽ अपमानित बढ़लें नीच शृगाल
मुदा जागि ई सिंह क्रुद्ध भऽ बनलउ तोहर काल
आब ने सरिपहुँ रहतउ तोहर कनिजो काल घमंड
चीनी तोहर सब मन्सूबा हयतहु खंड-प्रखंड
सावधान चीनी मुमूर्षु रहलउ दुनिञा ललकारि
बड़ा प्रबल छै भारत देशक सन्तानक तरुआरि

उठू प्रवीर

नरेन्द्र वीर धीर, उठू प्रचण्ड शक्ति धारि ।
कृपाण केँ पिजा प्रवीर, खसाउ मुण्ड मारि मारि ॥
मोन पारि शक्ति आदि, चित्तमे वृत्तिलाबि ।
पीटि-पीटि डंक डाक, बढ़ू चलू प्रशस्ति पाबि ॥
तुङ्ग शान्त देशमे, चीन बीज छीटि देल ।
थीक दान भाग्य पूर्ण, कालवीर आबि गेल ॥
काटि-काटि मुण्ड, तुण्ड बढ़ू प्रचण्ड काल मे ।
बढ़य प्रवीर कामना, कालमय त्रिकाल मे ॥
चीन चूर्ण विन्दु सँ, साजु माल जीति केँ ।
पैर सँ चूरि-चूरि, पीसि लाउ भीति केँ ॥
भूजि चीन फाँकि केँ, छीनि चीन मान केँ ।
जगाउ राग पंचमक, वीर पूर्ण गान केँ ॥
हम सिंह, थीक कन्दरा, पाँचजन्य शंखनाद ।
सूनि सूनि चीन जन्तु, भागि जैत सूनि नाद ॥
गाउ वीर रागिणी, उठू प्रचण्ड शक्ति धारि ।
उठू उठू उठू प्रबुद्ध, वीर पूर्ण बुद्धि धारि ॥

श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर'

नव मुण्डक माला गाँथू

मृत्युञ्जयक सुखद आङ्गन मे मृत्युक ई आवाहन
शान्ति दूत केँ समर-सिन्धु मे करय पड़ल अवगाहन
शिवक कुटी दिस आइ पुनः भस्मासुर मातल आयल
जकर प्राणमे महाविनाशक कीट अनन्त समायल
सत्य-अहिंसावादी केँ मिथ्याचारी ठकलक रे !
अपनहि हाथेँ चिता जरा' ई मृत्यु द्वार तकलक रे !!
मायक दूध लजौलक नहि कहिओ ई भारतवासी
आयल सम्मुख लाख परिस्थिति दुर्घट सत्यानाशी
जय जय भैरवि असुर भयाउनि पशुपति भामिनि जागू
शुम्भ-निशुम्भ पुनः जनमल अछि जागू, तन्द्रा त्यागू
रुण्ड मुण्डमय करू धरा केँ महिषासुरकेँ नाथू
भेल पुरान तोड़ि फेकू, नवमुण्डक माला गाँथू

कोटि कोटि भुज शीश बलिक हित अर्पित अहँक चरण पर
अद्‌भुत ज्योति-पुञ्ज जग व्यापत वीरक दिव्य मरण पर
आत्मा वीर प्रताप शिवाजी आदिक तखन जुड़ायत
देखि हमर पौरुष, अरि नाङड़ि कयने ठाढ़ पड़ायत
जागल देशक दीपित यौवन रक्त पुनः उधिआयल
नव-उत्साह-सिन्धु मे सरिपहुँ सौंसे देश नहायल
ठहरि सकत नहि दुर्मद दानव सुनि गर्जन प्रलयंकर
लय त्रिशूल उठलाह पिनाकी रुद्र रूप धय शंकर

श्रीगोविन्दचौधरी

आह्वान

नगपति केर उत्तुंग शिखर सौं धौंसा धमकल शान रौ
जननी केर आह्वान पड़ल छौ, चल चल दौड़ि जवान रौ ॥
चीन कटक कोटिक संख्या लै आबि चढ़ल शैतान रौ
भरल पुरल निज भारत भू कें वनबै छौ शमशान रौ ॥१॥

मोछ कतहु छौ मुखमण्डल पर डाँड़क डोरि प्रमाण रौ
रक्त रामकृष्णाक धमनी में भारतोक वरदान रौ ॥
तिलक सुशोभित भाल भाल पर गौ-गंगा सम्मान रौ
आँचर तर धरनीक नुकैने बचतौ की हिमवान रौ ॥२॥

युगयुगाधि सौं हिमकिरीट भय प्रहरी छल बलवान रौ
युगयुगाधि सौं मानसरोवर हमर पुण्य-संस्थान रौ ॥
युगयुग सौं कैलाश शिखर भारत संस्कृति केर प्राण रौ
युगयुग सौं बदरी विशाल केदार अमर भगवान रौ ॥३॥

रणचण्डी केर छौ ललकारा दुर्गा-वर वरदान रौ।
जननिक जठर करहिं नहिं लज्जित हरतौ टीक निशान रौ॥
जनउ जाति जूता तर पिसतौ साम्यवाद बइमान रौ
कहिया लै ई रक्त ? मंगै छौ रणचण्डी वलिदान रौ॥४॥

डंका चोट तोहर संस्कृति केर जगभरि सतत बखान रौ
तोर तेज सौँ अनुखन दीपित त्रिभुवन केर असमान रौ॥
साम्यवाद केर पीतसिन्धु में भसतौ वेद पुरान रौ
समरांगण में वीर-मरण राष्ट्रक हेतौ कल्याण रौ॥५॥

शपथ भवानी केरि शिवा केर केशरिया परिधान रौ
शपथ धेनु द्विज गंगा जी केर झुकय न राष्ट्र निशान रौ॥
शपथ तोहर जननीक कोखि केर रामकृष्ण हनुमान रौ
शपथ पड़ल छौ जन्मभूमि केर जे पड़लौ म्रियमाण रौ॥६॥

शपथ तोहर स्वर्णेतिहास केर जे एखनहुँ छविमान रौ।
शपथ तोहर गान्धी सुभाष केर तिलक मदन बलवान रौ॥
गुरू, भगत, विश्मिल, दिनेश केर व्यर्थ भेल बलिदान रौ ?
खुदीराम रघुनाथ रक्त सौं तप्त राष्ट्र केर प्राण रौ॥७॥

छप्पन कोटि देवगण स्वर्गक सीढ़ी पर विद्मान रौ।
जय जय दुर्गा गणपति शिवशिव शिखा सूत्र केर ध्यान रौ॥
साम्यवाद सावन सँ छौ आक्रान्त अपन मैदान रौ।
साम्यवाद तोपक मुख बान्हल मस्तक हिन्दुस्तान रौ॥८॥

ताल ठोकि दे ठाढ़धीर तों वीर-सिंह सन्तान रौ।
ताल ठोक सांगा-प्रताप पर पृथ्वि-कन्ह चौहान रौ ।।
ताल ठोक टकटकी लगौने छौ रूदल-मलखान रौ।
ताल ठोक मंगल पांडे ताँतिया कुमर गतिमान रौ ।।९।।

ताल ठोक प्रहरी छौ घायल पड़ल मुकुट छवि म्लान रौ।
पाञ्चजन्य छौ फूँकि रहल नहि सुन कोलम्बो-स्रान रौ ।।
अपनहि पाछाँ लागल रहतौ नढया पाकिस्तान रौ
जाग जाग रे वीर चढ़ल छौ मस्तक पर शैतान रौ ।।१०।।

श्रीसुरेन्द्रचौधरी बी० ए० ऑनर्स,डिप्-इन-एड

समर-संगीत

जागल रण-उन्माद उठू, जे निद्रित अद्यावधि छी।
छिः-छिः, अरिदल पैसि रहल घर, तैयो तानि सुतल छी।

हमरे भय सँ भीत पीत-मुख, चीन बनल युग-युग सँ,
हमरे संघक शरण पाबि जे नीक बनल बर्वर सँ,
हमर किरीटक विगलित करुणा सन, सिञ्चित जल-कण सँ
उर्वर बनि भरि पेट रहल जे प्रकृत भूमि मरु-थल सँ॥
कृत उपकार बिसरि कय सबटा दुश्मन आइ बनल ई॥

जेहि माथक मर्यादा राखल लक्ष लक्ष सेनानी,
जेहि माथक रक्षामे प्रस्तुत कोटि कोटि बलिदानी,
अँटकर त्यागि ओही मस्तक पर चढ़ल चीन उत्पाती।
पंखयुक्त चुट्टी मरबा लै उड़ल बान्हि कय पाँती॥
की करौट बदलब नहिं ? एखनो तन्द्रा मे अलसल छी।

त्यागि हिमांशुक आकर्षण के हिमगिरि दिशि लहरायल,
हिन्द-सिन्धु, उप सिन्धु युगल अछि उद्वेलित घहरायल ॥
विन्ध्याचल झुकि मार्ग देल अछि, दाक्षिणात्य द्रुत धायल ।
सप्त सिन्धु सँ पैर मिला कय, ब्रह्मपुत्र बहरायल ॥
युगल मात्र गन्तव्य दिशा अछि नेफा ओ लद्दाखो ।

लाल किला केर ध्वजा तिरंगा हैम दुर्ग पर गाड़ब ।
हिला सकत के, अडिग चरण जौं अंगद-मद सँ थापब ॥
आदि काल मे कयल जतय हम शिव-त्रिशूल संस्थापन ।
भौगोलिक सीमा 'मैकमैहोन' कैलक मात्र समर्थन ॥
सीमान्तक ई युद्ध आब नहि, चीनान्तक हो भारी ।

समर शंखमे फूक पड़ल अछि बाजि उठल रणडंका ।
मरण पर्व लै बढ़ू भारती वीर सुभट रण-बंका ॥
अन्तिम जय धर्मक अछि निश्चय लेश मात्र नहिं शंका ।
जयमाला लय स्वयं ठाढ़ि छथि विजय–श्री निश्शंका ॥
भाग-भाग रे दस्यु चीन केर काल तोहर आयल छौ ।
जागल रण उन्माद उठू जे निद्रित अद्यावधि छी ॥

श्रीभवनाथझा 'दीपक'

अभियान गीत

उठह, उठह, उठह
चलह, चलह, चलह
बढ़ह, बढ़ह, बढ़ह
घरक भेद भाव बूझि शत्रु आबि गेल
बुझा दियौक आन संग एक बुद्धि भेल
विश्व मंच मध्य हम उचित जगह लेल
विशद विविध भेष
हरित भरित देश
जाति-पाँति वर्ण-धर्म भेद-भाव हीन
राज-पाट कर्म-काज सब अपन अधीन
श्रमिक, कृषक, बुद्धि जीव, उद्यमी उदार
ग्रथित एक सूत्र मध्य व्यक्ति शत प्रकार

भुक्ति मुक्ति हेतु
वृत्त आइ एकताक सेतु
जनैत हित मिलैत माँटि
के सकत अनेर डाँटि !
सब प्रबुद्ध, सब सचेत
पैर पाछु क्यो न देत
देखाय देत शत्रुकेँ भैरवक स्वरूप
के अलच्छ निन्दमे रहत भसैत चूप ?
तिर्हुतिक माटिपर रहनिहार भाइ !
जन्मभूमि त्राण हेतु ठाढ़ हुअह आइ
लाख लाख कोटि कोटि केर ई प्रयाण
के कहैछ, मैथिलीक पुत्र अल्पप्राण ?
लक्ष्य चीन्हि लेल आब नीधि चीन्हि लेल
शत्रु-मित्र केर भेद-वीधि चीन्हि लेल
उठह, उठह, उठह
चलह, चलह, चलह
बढ़ह, बढ़ह, बढ़ह..............।

श्रीराधाकृष्ण झा, एम्० ए० डिप्-एन-एड्

समाद

मैत्री केर मोलम्मा दै-दै, चौकी पर चढ़ि अयलइ चोर
सीमा पर गोली बरसावइ, पतिता, निर्लज्जा, मुँह जोर
हम नँइ ककरो द्रोही छलिअइ, सबहक शान्ति हमर मनकाम
भल घर नोत तदपि जे देलकै, तकर विधाता एबरी बाम
धह-धह धधकइ आइ हिमालय, उधकइ कुधकइ पारावार
गंगा-यमुना लहरि-लहरि पर, बमकइ, करइ घोर हुंकार
टह-टह टहकइ मानसरोवर, खदकइ, छै' गंगोत्रिक पानि
खौलइ' शोणित बूढ़-जुआनक, आइ न किछु, अगवे छै' आनि
छटपटाइ छै' आहत सीमा, पटपटाइ छै रिपु-दल भीत.
काल नचइ छै "चाउ"क माथे" शान्ति-कथा लगिते छै तीत
चुट्टिक धारी जकाँ पठावइ, हाँजक-हाँज "बनैआ" चीन
मुट्ठी भरि "जवान" अड़ि रहलइ, मुट्ठी भरि लेने संगीन

सन-सन, सग-सन गोली बरसइ,दन-दन,दन-दन चलइ मशीन
हन-हन हन रन-चण्डी नाचइ, कन-कन, कन-कन हमर प्रवीन
अड़रा-अड़रा खसइ भूमि पर पाथर पर काटइ बपहारि
भुखले अनकर सीस सुड़रतै, विधि की करतै तकर गोहारि
साँच कहलकइ दोष-इयरवा, वानर नइ जीतइ मैदान,
कुदकइ फुदकइ गाछ-विरिछ पर गमवइ पाँतर पावि परान
धरती ठरल, ठरल छै तरु-तृण, हिम झहरइ छै ताड़मतोड़
जाड़-ठार छै बन-पहाड़ छै, विपतिक भेटइ ओर न छोर
चालिस कोटिक बल लै लड़इत छै रौ तैयो हमर "जवान"
बीस-बीस केँ मारि खसावइ जा नइ ता नइ छुटइ परान
स्वतन्त्रता संकट मे पड़ने, सरवस की ? जीवन बेकार,
बैसल ठाढ़ तमासा देखय, तकरा लाख-लाख धिक्कार
युद्ध मङइ छै आयुध भरि मन धैर्य एकता, और उछाह
युद्ध मङइ छै रुपया-सोना, नैतिकता, नूतन उत्साह
युद्ध जगावइ सुप्त देश केँ, युद्ध भगावइ द्वेष-विषाद
युद्ध पखारइ जन-बल, मन-बल,युद्ध झखाड़इ प्रबल प्रभाव
न्याय-युद्ध पौरुष परिचायक, न्याय-युद्ध, गीता आदेश,
न्याय-सुरक्षा लेल लड़इ छै, गौतम गांधी केर सुदेश
एक्को नर जाग्रत जीवित जा, स्वतन्त्रता केँ लगइ न आँच
बुद्ध-प्रबुद्ध युद्ध हित उद्यत, तकर हारि बूझइ से काँच

राष्ट्र प्रबुद्ध संग दै रहलइ, न्याय-युद्ध मे भारत केर
ढोनि ढेकार होइ छै रिपु केँ, टेङड़ा-पोठी पूरइ हेर

तों की छेँ मनहूस मर्दवा, बजवै छौ तोरो कैलास
बदलि रहल भूगोल आइ छै, गढ़ि रहलइ नूतन इतिहास

युद्ध-विराम ? विराम न ई रौ, हमरा छै लड़ना अविराम
शत्रुक बाट विनाश तकइ छै, एक्खन तँ चुबिते छै घाम

पैर बढ़इ जइ शत्रुक सीमा दिशि, दे ओकरा सत्वर तोड़ि
गर्दनि उठइ विरुद्ध भारतक जे, दे पकड़ि ममोड़ि-ममोड़ि

गोड़ि दही धरती मे—मूड़ी रगड़ि-रगड़ि करही सनमान
भूजि दही गोली सँ जहिना भुजइ गोढ़नी अपन मखान

बच्चा बच्चा वीर बंकड़ा, तोँ बच्चा-बच्चा "चौहान"
रौ, तोरा सँ जे क्यो भिड़तइ, अपटी खेत गमौतइ प्रान

भरत-भूमि पर चरण विदेशीक,जाधरि-ताधरि शान्ति न शान्त
अपने ऊकेँ भरकि रहल छै, अगिलगुआ चीनी उद्भ्रान्त

श्रीगंगाधरमिश्र, व्या० आ०, बी० ओ० एल०

समर-सङ्कल्प

१

'लद्दाख' मध्य 'शैतान सिंह'
'नेफा'क मध्य 'होशियार सिंह'।
पौलनि जे वीरक गति पुनीत
सर्वत्र ठाढ़ से पुरुष सिंह॥

२

रहि रहि कहैत छथि मानु आइ-
"मम भेल जतय अछि रक्त-पात।
देखब हे भारत - वीर - बन्धु!
दानव नहि राखय ओतय लात"॥

३

हम सब कयलहुँ संकल्प आइ
निश्चय 'नेफा' 'लद्दाख' लेब।
अन्याय कयल जे हमर संग
तनिका हम छक्का छोड़ा देब॥

४

ई देवताक आत्मा विशाल
उत्तुंग हिमालय पुण्य भूमि ।
नहि रहय देव अपवित्र मित्र
तैं 'चीन' एतय सँ जाओ घूमि ! ।।

५

जागल 'नेफा' 'लद्दाख' आइ
कहि रहल विश्व धिक्कार 'चीन'
अछि नीति जकर विश्वासघात
मानवता सँ जे अछि विहीन ।।

६

छोड़ब न भूमि प्रादेशमात्र–,
संग्राम करब हम एहि हेतु ।
प्रस्तुत छी तैंतालीस कोटि–
फहरायब निश्चय विजय केतु ।।

७

गीता गंगा गान्धीक देश–
कयलक अछि जे पापी प्रवेश ।
हम भारतीय तकरा निकालि–
गिरिवर-आङ्गन पूजब महेश ।।

श्रीशंभुनाथ बलियासे 'मुकुल'

'चीनी' चाटि सकैछी

आइ उदासी घिरि आयल अछि, मन मरुआयल गात
अरुणक ज्योति घटा बढ़ि बाँधलि दिनहि अमावस रात
खेतक बीच दड़ारि पड़ल अछि
मुरझल हरियर धान
कृषक सुहागिन सीमन्तक की
हरति मुदा सुचि मान ?
उमड़ि-घुमड़ि इतराय रहल अछि, बिजुरी देखबय गात
धरतीक लाज सिसोहि, पीबि, चढ़ि, नभ सँ करइछ बात ।।
भावक स्रोत बढ़ल, बढ़ि घटले
फल्गुक धार जकाँ
बुद्धक संघ, अबुद्ध संग सटि
बिकइत टकाँ-टकाँ ।

पंचशील परिव्राजक पाथर, फुरइ न चेतन बात !
काल्हिक भाइ, आइ आयुध धै करइछ बढ़ि-चढ़ि घात ॥
झूठ साँच बढ़ि आँच देखावय
शिव उद्‌बुद्ध, तामाशा !
शक्ति स्तब्ध-खँखुआय रहल छथि
जनगण, मन-मन आशा ।
सुरपुर असुर अधिप की होइत, आशंकित मन स्यात
हहरि-हहरि हिय अकुलाइत अछि, अजगुत लगइछ बात ।
एक गप्प शिव प्रांगण में
विस्मृत क्यो किए' करै छी—
मधुरक प्रेमी "हिंदू" छी तेँ
"चीनी" चाटि सकै छी ।
चलू, बढ़ू-रण-आङन में, चढ़ि करू घात-प्रतिघात
बाप-बाप चिचियाइछ चीनी, धकियाबी दै लात ।
आइ उदासी घिरि आयल अछि, मन मरुआयल गात
अरुणक ज्योति घटाबढ़ि बाँधलि दिनहि अमावस रात !

तोड़ कलम करतूस बना ले !

हिमगिरि केर आंगनसँ आयल
रण चंडीक हँकार छइ।
मैत्री विश्वासक छाती पर,
दुश्मन केर ललकार छइ॥

एक लक्ष्य लै वक्ष तानि कै,
झुमि झुमि उठलइ लाख हजार।
पथ पर अनल-पुष्प वरसइ छइ,
वलिदानीक विजय 'त्योहार'॥

उफनि रहल शोणित धमनीमे,
मुखड़ा पर हँसि उठइ जवानी।
घर-घर सँ चलि पड़ल शिवाजी,
गाँव गाँवसँ झाँसी रानी॥

बढ़ि कै 'साथी आइ' उठा ले,
चंडी क खड्ग दुधार छइ।
हिमगिरि केर आङन सँ आयल,
रण चंडीक हँकार छइ॥

सै सै गंगा जलसँ धोने,
नहि छूटइ इतिहासक दाग।
एक बेर भू-लुण्ठित भेने,
फेर चढ़इ नहि माथा पाग॥

जौँ द्रौपदी नगन भै गेली,
तँ गाण्डीवक काजे कोन।
आँखि खोलि कै पार्थ देखि ले,
कतऽ भीष्म रहि गेला मौन॥

रे त्रिपुंडलै शंकर मांगथि,
वीरक दीप्त चिता केर क्षार।
डम डम डम डम डमरू वाजय,
तांडव केर भेलइ हुंकार॥

धम धम धम धम बम केर वर्षा,
बजइ वैण्ड पर मारू राग।
सै सै गंगा जलसँ धोने,
नहि छूटइ इतिहासक दाग॥

सोना बेटा कटय युद्धमें
तखन कोन सोना केर मोल
रे प्रताप जूझइ हल्दी मे
भामाशाह खजाना खोल

आइ विश्व भरि केर स्वतन्त्रता
मांगि रहल हमरेसँ मोल
दही लेप कै मांस चटा दे
उठ दधीचि निज हड्डी तोल

कंचन जंघा डगमग डगमग
मानसरोवर मे 'तूफान'
जय जय भैरवि असुर भयाउनि
अधर अधर पर गुंजित गान

हमरे गतिमे विश्वक गति छइ
ताकि रहल अणु-क्षत भूगोल
सोना बेटा कटइ युद्धमे
तखन कोन सोना केर मोल

अरे लक्ष हाथी की सहतइ,
शत शार्दूलक क्रुद्ध प्रहार।
उड़इछ नगपति पर भारत केर
बिजय तिरंगा विपुलाकार॥

रण बिन जीवन, जीवन बिन रण
की जीवन जँ देश 'गुलाम'
हमरा सीमा दिस जे ताकत
तकर आइ विधाता वाम

रिमझिम गोली ऑटो-गन केर
धड़ छोड़इ शोणित बुमकार
तोड़ कलम करतूस बना ले
रे कवि अग्नि वीण झंकार

आइ पैर तर बहइ हिमानी
सिर पर बहइ आगि केर धार
तैयो उड़इछ शिखर शिखर पर
विजय तिरंगा विपुला कार॥

रण-आह्वान

हे प्रवीर ! देखू दस्युक दल उतरि रहल अछि,
ध्वस्त भेल कैलाश, हिमालय त्रस्त भेल अछि !
झुकल भाल, हिम-मुकुट खसल लुण्ठित लोहित भय,
रक्त-बिन्दुसँ धवल रूप अति ग्रस्त भेल अछि ॥

तइओ नहि की रक्त शिरामे बहत चपल-गति ?
तइओ नहि की रोम-रोमसँ ज्वाला भड़कत ?
तइओ नहि की आँखि बनत अङ्गारक गोला ?
तइओ नहि की खड्ग तड़ित सन करमे चमकत ?

चमकि रहल इतिहास अपन बलिदानक दीपित,
अपन राष्ट्र-स्वातन्त्र्य हेतु कत शीश कटाओल ।
व्यर्थ आइ भय जायत से की सबटा अरजल ?
कटा देब की गौरव-तरु जे स्वयं लगाओल ?

व्यर्थ एहन आशङ्का, ई थिक भूमि भारतक,
मान एकर हरि के गुमान कय जीवि सकै' अछि !
नर-पिशाच ! निश्चय पयबे" तो" दुष्कर्मक फल,
शान्ति-अहिसक शत्रुक शोणित पीबि सकै अछि ॥

ई नटराजक देश, नाश-सृष्टिक सङ्गम थिक,
महाभारतक देश, देश थिक कृष्ण-अर्जुनक।
अत्याचारक चिता-भूमि ई धू-धू करइत,
निधन-भूमि ई राज्य-प्रसारक शत्रुक स्वप्नक॥

जे आओत लय हिंस्र-भावना डूबि मरत से,
जन-गण-सिन्धु प्रशान्त तरङ्गाकुल चञ्चल अछि।
विश्वक शीतलताक विधायक सौम्य हृदयमे
जागि रहल अछि आगि, नयनमे भरल गरल अछि॥

राष्ट्र एक भय गेल, भेद नहि मनुज मनुज मे,
सभक प्राणमे सम्मानक विस्फोट भय रहल।
करइत अछि हुङ्कार जागि जनि देशक गौरव,
बजा वाद्य युद्धक, डङ्का पर चोट दय रहल॥

युद्ध ! युद्ध ! माताक प्रतिष्ठा अछि सङ्कटमे,
भूमि अपन सुतसँ कर्तव्यक बाट तकै' छथि।
युद्ध ! युद्ध ! प्रतिकार आततायीक दलन थिक,
मातृभूमि हित के जे नहि तन वारि सकै छी ?

देशक अमर अखण्ड आत्मा जागि गेल अछि,
उत्साहक अन्तरमे खरतर वेग भरल अछि।
कते' काल बढ़ि सकत अनय असुरक उच्छृङ्खल,
जखन सत्त्व हित सबल कोटि कत डेग बढ़ल अछि !

जय भारत

जय भारत जन शक्ति भवानी
जय जय मानव कुल कल्याणी ॥

तव मूर्धा मूर्धन्यकोटि विद्वानक बुद्धि विवेक विलक्षण
सतत निरत मनुजक उत्कर्षक सहज सरल साधन अन्वेषण
सत्य अहिंसा आधारित सम्मान मुकुट मणि मण्डित रानी
जय भारत जन शक्ति भवानी
जय जय मानव कुल कल्याणी ॥

राजनीति कुंचित कल कुन्तल सद्भावना स्नेह सँ वासित
तत्त्वशील सिद्धान्त सूत्रसँ गुम्फित विविध सुमन विन्यासित
साधु सुहृद देशक मनमोहक दुष्ट शत्रु ग्रीवा हित फानी
जय भारत जन शक्ति भवानी
जय जय मानव कुल कल्याणी ॥

सत्संकल्प सुदृढ़ वक्षस्थल युगल उरज निष्ठा उत्साहक
नैसर्गिक साधन आयुध युत कर असंख्य संचालित कर्मक
ध्वज अजेय शक्तिक प्रतीक गुण साम्यधर्म चक्रेक धारिणी
जय भारत जन शक्ति भवानी
जय जय मानव कुल कल्याणी ॥

आगाँ चरण धरह

अचल आइ चंचल कंपित अछि, भूकेर मस्तक डोलय
हिमवनमें विश्वासघात केर अरि विष-जिह्वा खोलय
पिता हिमालय बज्र खसाबथि, तों बनि प्रलय खसह !
भूमाकेर उच्छ्वास 'जुवागन' आगाँ चरण धरह !!

कफन-सफेदी-शांति : शांतिकेर छल-प्रपंच-स्वर वाला
पंछीसन मृदु-बोल सुनाकै मन बहटारयवाला
चंगेजक ई शांति बाजकेर पाँखि एकर कतरह !
शांति-कपोतिक गेल्हक रच्छयँ रुद्र-त्रिशूल धरह

सम्मुख शीश करह. तोरा हम माटिक तिलक लगादी
कफन बान्हि दी आर घोंट भरि मादक दूध पियादी
रक्तसरीमे श्वास पवनरथ चढ़ि, जयमाल धरह !
बेरि-बेरि लै जन्म मातृहित मरि-मरि मीत लड़ह !!

चीड़ चिनार बरफ घाटीमे बाजय जुद्ध नगाड़ा
मा-गंगाक लहरिमे गलिकै आयल अछि ललकारा
तरुआरिक कत धार करब बरु आब न देरि करह !
ढाल राष्ट्र-बिसवास अडिग भै मारह वा कि मरह !!
भूमाकेर उच्छ्वास 'जुवागन' आगाँ चरण धरह !!!

श्रीमतीलक्ष्मीवतीदेवी 'लीला'

चीनी-सप्तक

बिसरल संस्कृति अपन जे दपदप भेल अधीन
आयल दिन देखत अबस नामहु ताहि विलीन।
धानक गहुमक करत की परतर कोदो चीन।
मिसरीसँ सब दिन रहत चीनी सहजहिं हीन॥
गुरु वशिष्ठ वा गौतमक रहल न पहिलुक चीन।
चङ्गेजक कुवलयक बल जखनहिं कयल अधीन॥
शोषित चीनक दनुज सन ई ललकी सरकार।
भस्मासुर बनि करय पुनि हिमगिरि पर फुफकार॥
आइ समय सङ्केत कय उठबय भारतवर्ष।
गीताचण्डी गहि करी कर्म, त्यागि आमर्ष॥
चूटी सभकें पाँखिये बनइछ कालक रूप॥
नीति बिसरि मनुजहु सहय दुर्गति पशु-अनुरूप।
बिनु शक्तिक किछु पुरुष नहिं, नहिं पुरुषक किछु शक्ति
अपन परारक ज्ञान बिनु की अनुरक्ति विरक्ति ?

भारत महान

सावधान ! रे सावधान !! चीनी नरकासुर सावधान !
सूतल सिंहक पौरुष जागल क्लीवत्व-अहिंसा-तम भागल
दागल मानवता लोहछि उठल कछमछा उठल आबाल-वृद्ध।
जे तप्त लौहपिण्डक समान व्योमक छाती पर छरपि
छीनि सूर्यक गोलाकेँ करय ग्रास उत्ताल तरङ्गित सप्तसिन्धु
चूरूकमध्य धय करय पान निज स्वाभिमान सम्मानक हित
हड्डी पर्यन्तक करय दान पौरुषक पुञ्ज भारत महान।
ओ कालहुँकेँ ललकारि सकय दैत्यक दलकेँ संहारि सकय
तेँ नीच-नारकी साम्यवादसँ सनल-बनल
जे भस्मासुरक प्रतीक आइ कय भस्मसात्
उड़िआय सकत नभ मण्डलमे, इतिहासक पन्नामे तकनहुँ
नहि भेटि सकत नामोनिसान
से रुद्ररूप, प्रलयंकर शंकर मूर्तिमान
चौआलिस कोटिक प्राण-प्राण सन्नद्ध सैह भारत महान।

नवका वर्ष चीनी-युद्धक पृष्ठ-भूमिमे

जीर्ण केचुआ शीर्ण वर्ष केर छोड़ि
नव उमंगमे, नव-तरंगमे मातल
आयल नवका वर्ष जनु भुजंग नव !
बूढ़, पुरान सर्प छल धिम्मर भेल,
चुट्टी-पिपड़ी धरिक हेतु छल खेल,
किन्तु न अछि ओ बात—
आरिपरक खुट्टीमे ओझरा देह,
जर्जर कयलक जीर्ण केचुआ,
नयन आब अछि मुक्त।
देखि रहल अछि दूर-दूर धरि नील-नील आकाश
विस्तृत अप्पन धरती।
जोर-जोर सँ दै' अछि सीटी युद्ध क्षेत्रकेर बिगुल बजय जनु
फणा भेल अछि ठाढ़
शक्ति भेल अछि गाढ़।
ललकि-ललकि जनु बाजि रहल अछि—
"आबह क्यो पुनि देख लेबह हम।

प्रोफेसरश्रीरामदेवझा

भारत जननी

चरण प्रदेश

चरण रज लय, ठाढ़ि अछि कन्या कुमारी
अहँक चरणोदक जोगौने सागरक शुचि पात्र भरि कS।
सतत लालायित परस हित आकुलित गति
संयमित नहि रहि सकल तेँ तरंगित अछि
नीरधिक छिलकैत छन छन देह।

मध्य प्रदेश

अहँक खोञ्छिामे भरल अछि
दूबि-धानक रूपमे ई, विन्ध्य पर्वत केर शृङ्खल
अछि कते मिज्झड़ हरदिकेर गेंठ सब-छवि
जकर लS पीताभ बनले हेम।
रत्न-गर्भा और वसुधा सार्थके अछि नाम
रोम राजिक रूपमे अछि लक्ष्य संख्यक गाम।

हृदय प्रदेश

अछि कते ममताक परिमिति,
जानि के सकते कहू की,
अपन सन्तति हेतु संचित,
भऽ रहल स्रावित युगो सँ
स्वच्छ गंगा और ब्रह्मपुत्रक सरितमे
पद्म हृदये, पसरि रहले, अहँक नीर-सिनेह ।

मस्तक

हिम धवलिमासँ सुशोभित
अहँक उन्नत शीश अछि हे—
हमर वृद्धा मा, बहिक्रमकेर गरिमासँ सुपूरित
श्वेत कान्तिक केश
अछि कहब अवशेष ।
केश नहि टूटय कनेको टा जननि हे !
नोचि लेबक हेतु दुस्साहस करय नहि
आततायीकेर निर्मम हाथ
विश्व भरिमे रहय उन्नत
अहँक गुरुवर माथ ।
लागि नहि सकते अहँक तन
लघुहु कुशाक कलेप ।

सैंतीस

फेकि नहि पाओत कतहु क्यो
छोट-छीनो ढेप ।
छी सतर्क सचेत, तत्पर सतत रक्षा हेतु
केतु फहरय व्योममे निर्द्वन्द्व ।
मन्द नहि होइ मुखर मुस्कान
जननि हे, अर्पित हमर हो कोटिकोटि प्रणाम ।

श्रीमतीश्यामादेवी

अभियान

उठू सखी अभियान करू।

बैसल पिता वृद्ध छथि घर मे, भैया गेला हर्षसँ रणमे।
प्रेम-सूत्र जौं राखब दृढ़ तँ, नहि चाहब सुख नश्वर तनमे
विजय देत सीमा-संकट मे, अहँक प्राणकें प्रतिपल नित्य
मनमे मिलन, विजयकेर आशा, तनमे भरल उमंगक नृत्य।
करती सतीं सोहागक रक्षा,
सिन्दूरक अभिमान करू॥

तावत नहिं हम पहिरब सोना तनमे नहि किछु करब शृङ्गार
जावत नहि भारत जननीकेर होयत शुभ निश्चित निस्तार॥
करब परिश्रम दोगुन, सूतब नहिं हम कखनहुँ चैनक नीन।
त्यागब जखन अपन सुख-धन-जन तखनहिं सधत देशकेर रीन
वोर बना निज निज लवकुश कें,
देशक हित बलिदान करू॥
उठू सखी अभियान करू॥

श्रीरमानन्दलाल 'रेणु'

जागू भारतवासी !

मित्र राष्ट्र जे चीन बनल छल आइ स्वार्थ मे आन्हर
जकर नीति विश्वासघात अछि पंचशील तेँ नाङर
चीनक काल कुहर बनि नाचत तैं तऽ बमकय भारी
पैरुखकेर प्रदर्शन कयने पीटय ढोल अनारी
माइक लाज बचाबऽ खातिर हम स्वाधीन पुजारी
श्रमसँ कत अरजल सिनेह छोड़ब नहि कतबो हारी
हमरा कैने लक्ष्य केओ जँ साध अपन किछु साधत
दम्भ कूटनीतिक नाङरि धऽ लाल आँखिसँ ताकत
तऽ हम अप्पन अर्जित बलसँ मारब, छी हम जाबत
आङुरसँ हम आँखि फोड़ि देबैक एम्हर जँ ताकत
पूर्वक किछु अभिलेख गवाही अछि औखन ओ चेतौ
हम सिंहक सन्तान बनरभौकी नहि सहब कनेको
कुरुक्षेत्र केर शंखनादसँ पुनरपि जागौ धरती
बाल-वृद्ध केर नशमे लहरै, उष्ण तेज केर बढ़ती
हिमगिरि आसन डोलि रहल अछि जागू भारतबासी
रुद्र रूप व्रत संहारक लऽ लिअऽ बुद्ध अविनाशी
पलखति अछि नहि आब कि साजब जागू जारू टारू
आइ विदेशी घरमें पैसल मारू, मारू मारू !!!

विष मन्थन

बनल आइ तरुआरि लेखनी भरल रक्त मसिदानी
क्षुब्ध विराट विपुल विप्लव सुनि विषमन्थनक 'कहानी' ॥
हिमगिरि बनल मथनियाँ वासुकि, रज्जु मृत्युमय ज्वाला ।
सुभट जवान पुत्र भारत उर, शोभित मुण्डक माला ॥
बदला क्षीरोदधिक सैन्यरिपु, कलुषित चीनी काया ।
शिव त्रिशूल हर हर चुसूल मे, भूलुंठित खल माया ।
सुन्दरि चीनी विषकन्या केर, झरलै विष केर लहरी :
युग युग जिबथु जवान वीर भारत केर प्रस्तर प्रहरी ॥
पाठ बिसरलें युग सहस्र केर, धिक् आहत गुरु कयलें ।
भोथ माथ गोबर ठूसल छौ, तैं शस्त्रक बल धयलें ॥
अमर धवल कैलास रुद्र प्रांगण मे तांडव लीला
व्याकुल हंस सुधा मानस सर, परिणत विष 'जहरीला'
चन्द्रगुप्त चाणक्यक जोड़ा, युग प्रसिद्ध रिपु दलतै ।
शौर्य प्रवीर विक्रमादित्यक, तेज बह्निमय तपतै ॥
खांडव वनक प्रचंड अनल मिलि कृष्ण किरीटी सिरजथु ।
एक हाथ गांडीव, सुदर्शन चक्र अपर, रिपु मरदथु ॥

ता ता थैया

जग जनैछ युग-युग सँ पूजल हम गौतम ओ गाँधी
बन्हने छी ताही दिन सँ दूनू मुट्ठी में 'आँधी'
विश्व विदित ई बात ग्रास कैने छल रवि हनुमान
जिविते छै, एखनहु धरि तकरो कतेक वीर संतान
भरि आँजुर मे सप्त सिन्धु लय पियल पुरल नहि छाक
रे अगस्त सन्तान ! सुनइ छेँ नहि अगस्त केर हाक
पांचाली केर केस फुजल छै रे ! चीनी दुःशासन
बचा न सकतौ विश्व, भीम लै लेलक अछि वीरासन
माँ भारतकेर फुजल अलक हम रिपुक रुधिरसँ सींचब
छल अशोक तरुआरि म्यानमे मुदा आइ हम खींचब
शाह सिकन्दर सेहो चलल छल, जीतय एकदिन भारत
रावी तट धरि पहुँचि घुरल छल देखि मौर्य पुरुषारथ
चाणक्यक वंशजक फेरसँ फूजल आइ शिखा छै
रिपुक रुधिर केर पान करै लय जागल महा तृषा छै

माँ महेश्वरिक नैहर तै ठाँ अपन अपावन चरण घेलक अछि
निश्चय बूझौ एतै आबिकै मोल अपन ओ मरण लेलक अछि
शिव समाधिमे लीन आबि तनिका के आइ जगौलक
सदै हिमाचल शिखर ऊपर के पापी आगि लगौलक
नहि जनैत अछि भरिसक ओ शिव तांडव केर परिणाम
नहि जनैत अछि, होइछ तखन की, जखन विधाता वाम
एक बेर जँ फुजत जटा तँ के सम्हारि पुनि पाओत
डिमकत डिमिकडिमिकडिम डमरू विश्व बाँचि नहि पाओत
डोलि उठति डगमग ई धरणी डोलि उठत आकाश
चालिस कोटिक साँस चलत बनि जखन पवन उनचास
पार्थ चलत गांडीव हाथ लै, उठत वीर चौहान
जागि उठत राणा प्रतापकेर गौरव अटल महान
तखनहि सिंहनाद बनि गरजत भूषण कविकेर वाणी
वीर शिवाकेर चमकि उठत पुनि चकमक खड्ग भवानी
'नेफा' ओ 'लद्दाख' चलत रणचंडी झाँसिक रानी
'चाउ' 'माउ' केर कथा कोन नहि बाँचत एको प्राणी
स्वर्ण रक्त केँ के पुछैत अछि हम दधीचि सन्तान
अपन अस्थि धरि दान करै छी हो विश्वक कल्याण
चीनी वंशक नाश करैलय प्रस्तुत कृष्ण कन्हैया
एक बेर पुनि नागक फण पर नाचथु ता ता थैया

भारतीय नारी

भारतीय छथि नारि बनल दुर्गा अवतारे ।
भारतीय छथि नारि सकल भारत आधारे ॥
भारतीय जननी भारत माँ जीवन चारे ।
भारतीय काँ भार लखब मानव सुखसारे ॥
भारतीय उपकारक नहि जग पायब पारे ।
भारतीय परमाणु अणुक वसुधा संसारे ॥
भारतीय नहि पाछाँ छल औखन नहि पाछू ।
भारतीय लक्ष्मी पण्डित गुण जग सौं पूछू ॥
भारतीय भंडार नायका काजे देखू ।
भारतीय हिमश्रृंग उमा युद्धे अभिषेकू ॥
भारतीय बल अस्त्र शस्त्र पाँती काँ पूरब ।
भारतीय तिन रंग पताकेँ छाहरि जूरब ॥
भारतीय सौं त्रस्त शत्रु ई दूर पड़ायत ।
भारतीय जगतीय सदा अनुकरणे गावति ॥
भारतीय काँ करब समादर भारत चन्द्रे ।
भारतीय छी सत्य बुझब महि परमानन्दे ॥

श्रीमती विमला झा

भारतक सन्तान जागू

(१)

जे न कहियो आन देशक भूमिसँ किछु लोभ कयलक।
जे सतत अनकर स्वजनकेँ अपन बुझिकय नेह कयलक॥
जे प्रपीड़ित पद-दलित केँ अपन घरमे शरण देलक।
हा एहन भारत महीकेँ चीन आँचर छोर धयलक॥१॥
भारतक अभिमान जागू॥

(२)

जे अचल नहि भेल डग-मग से अचल समुदाय काँपल।
देखिकय विश्वासघाती नीतिसँ गिरि हृदय फाटल॥
उमड़ि छल कल नयन घनसँ बहल अविरल अश्रुधारा।
मौन तजि गिरिराज गरजथि कहथि सदिखन एक नारा॥
भारतक सन्तान जागू॥२॥

(३)

भऽ रहल अछि मान-मर्दन जा रहल अछि लाज सदिखन।
द्रौपदी भारत-महीकेर रक्त-रञ्जित चीर कर्षण॥
कृष्णकेर वंशज कहाँ छी की बिसरलहुँ चक्र धारण।
देरि कयने लाज जायत रुकि रहल छी कोन कारण॥
कृष्ण वंशक प्राण जागू॥३॥

(४)

कोन तन्द्रा मे पड़ल छी की न सुनलहुँ शत्रु गर्जन!
हा कोना भारत मही केर सहि रहल छी नोर वर्षण!
यदि न देशक भाइ बढ़ता बहिनि करती शस्त्र धारण।
गगनसँ अंगार बरिसत युद्ध होयत लोम-हर्षण॥
हाथ मे लऽ प्राण आगू॥४॥

(५)

पाक चीनक सैन्य वारिधि जौं बढ़त कखनो अचानक।
प्रबल-ज्वाला सँ जरायब वाड़वानल बनि भयानक॥
रुण्ड-मुण्ड पथार लागत जखन हम सब बनब काली।
धरणि दलकत शत्रु भागत गरजि दौड़त लऽ भुजाली॥
दुष्ट चीनक शान दागू॥५॥

युद्ध-गीत

दुश्मन थिक चोनी, फाँकू
सत्य शिवक सुन्दर कैलाश-शिखर सीमा सँ हाँकू
हम शान्त अहिंसक नामी, गान्धी बुद्धक अनुगामी
हमरे सँ ज्ञानक पाठ पाबि, देखबइ अछि दहिनी बामी
श्रम जनित पिपासा शान्ति हेतु तकरे शोणित टा छाकू
'कुमर' 'भगत' बलिदानी, 'दुर्गा' सन झाँसिक रानी
ललकारि रहल छथि हिमगिरिसँ, पुनि माता अपन भवानी
हे अनल शिखर पर हँसनिहार, घुमिओ जुनि पाछाँ ताकू
व्यालिस करोड़ हम संगी, अर्जुन समान धनु रंगी
शत कोटि निशाचर कौरव दल केँ हतनिहार बजरंगी
भस्मासुर कुल संहारक ! शिव सन प्रलय दृष्टि पुनि ताकू
धरती जँ धसय अतलमे, ई गगन खसय पुनि जल मे
क्रोधाग्नि ज्वालमे धधकि खाक जँ सकल सृष्टि हो पलमे
जल-थल-नभ गिरिपर लड़निहार,युग-युगधरि तर्दाप न थाकू

श्री प्रवासी साहित्यालंकार

चीनक दुःस्साहस

बिना श्रमक जे रोटी पाबथि, बिनु चिन्तें उत्कर्ष;
से साम्यक उपदेश देथि जनिका अगबे आमर्ष।
मारकेस लागल मरखाहक सब सिद्धान्त अनोन,
देखले पेकिंग, किंग मास्को सब देहरि-सब कोन;
जयचन्दक अछि पालि बढ़ल जा रहल लोक संत्रस्त
बेचत ई कन्नौजे टा नहि, आर्य्यावर्त समस्त;
बिलटि रहल अछि मानसरोवर, बिलखि रहल कैलास,
धवलागिरि अकलाक छलै ? की लिखता कालीदास !
अध्यात्मक आत्मा छिनाइत अछि, शिवसनकादिक वास,
नैहर पदाक्रान्त छनि यमुना गंगा भेलि हताश;
उमा जुड़यती कतय ? स्वयं वन्दी छथि श्री हिमवान,
मञ्जु-मराल मानसक उड़ि गेल, सौंसे सुन्न-मसान;

एक टेक पर अधिकारक हित बद्ध भरत सन्तान !
आँचर मे भिक्षा मङैत अछि भारत भूमि महान ;
चीन दीन अछि अपनहिं, मङने छल कहियो शिष्यत्व,
दाता लग मङिते रहैत अछि भिक्षुक स्वत्व महत्त्व ;
कतबो चेला चीनी मिसरी बनता उच्च पदस्थ,
गुरु गम्भीरक कोपासुर धरि गीड़ि करत उदरस्थ ;
शिष्य बुद्ध केर चाहय थाहब, शौर्यक सिन्धु अथाह,
हृदये ज्वालामुखी भारतक, की शशकक परवाह !

श्रीगोपीकृष्ण एम० ए०

आह्वान

भारत-माता केर वरद पुत्र
सभ शक्ति समेटि सम्हारि लिअऽ
कय बेरि परीक्षा दऽ चुकलहुँ
एक बेरि परीक्षा और दिअऽ।

अछि देश आइ ललकारि रहल
अछि रण केर साज सजाय रहल
अछि गाँव-गाँव सब जागि रहल
अछि नगर-नगर उधिआय रहल।

रिपुदलसँ लोहा लेबा हित
पुनि आइ करेज बनाय लिअऽ
कय बेरि परीक्षा दऽ चुकलहुँ
एक बेरि परीक्षा और दिअऽ।

प्राण-प्राण मे जोश भरल अछि
सब जुआन कन-कन करैत अछि
अबला सबला आइ बनल अछि
चारू दिशि उन्माद भरल अछि

कण-कणसँ साहस उमंग लऽ
अपनाकेँ अजमाय लिअऽ
कय बेरि परीक्षा दऽ चुकलहुँ
एक बेरि परीक्षा और दिअऽ।

जागि गेल अछि भारतवासी
बंग, असम, पंजाब, मराठी
मध्यदेश, उड़िया, बिहार सब
जागि पड़ल अछि मिथिलावासी

चालिस कोटिक प्राण प्राण केँ
एक सूत्रमें बान्हि लिअऽ
कय बेरि परीक्षा दऽ चुकलहुँ,
एक बेरि परीक्षा और दिअऽ।

दुश्मन लेल अङोर छी

आइ हिमालय माङि रहल अछि जन-जन सँ बलिदान रे
उठू, उठू, सभ क्यो मिलि जुलिकऽ करू हिमालय त्राण रे
युग-युगसँ 'शिर-ताज' हिमालय संस्कृति-ध्वज रहि आयल
बल प्रयोगसँ दुष्ट चीन छीनइ चाहय चढ़ि आयल
ई वेला नहिँ सोच-विचारक, धरू कर तुरत कृपाण रे
आइ हिमालय माङि रहल अछि जन-जन सँ बलिदान रे ॥

शान्त शुद्ध देखि ओ बुझलक किछु नहिँ होयत एकरा सँ
अमर हमर इतिहास पुरातन बिसरि गेल से धोखा सँ
हमही छी ओ जे खयने छी बना हूण के पान रे
आइ हिमालय माङि रहल अछि जन-जन सँ बलिदान रे ॥

जे जे आयल, सभके खयलहुँ, गलि-पचि गेल जहान
राणा, अर्जुन, वीर शिवा सन हमही छी बलवान
कोमल छी कोमल भावक हम, नहिँ तँ वज्र कठोर
दुश्मन बनि जँ क्यो आओत तँ तकरा लेल अङोर
मातृ-भूमि रक्षाक लेल अछि, तन-धन-जीवन दान रे
आइ हिमालय माङि रहल अछि जन-जन सँ बलिदान रे ॥

कर्त्तव्य

मातृभूमि केर इञ्च इञ्च सँ जाधरि ई नहि भागत।
अपहृत अपन समस्त भाग पुनि जाधरि हाथ न लागत.
कान पकड़ि ठोठिआय न जाधरि टाङ एकर हम तोड़ब,
सप्पत थिक माताक न कथमपि ताधरि एकरा छोड़ब ॥

सत्य-अहिंसा कथा यथावत् रहऽ दिअऽ इतिहासहि मे,
विश्व-बन्धुता, समता सब किछु रहऽ दिअऽ सिद्धान्तहि मे
शान्तिक सुन्दर रस चाखल हमरा चाही क्रान्तिक ज्वाला
गान्धीजीक काज नहि सम्प्रति चाही छत्रपतिक भाला ॥

तीर्थंकर तीर्थे मे बैसथु वहओ सुभाषक विकट बिहाड़ि
सत्याग्रहक समय नहि सम्प्रति चमकय ओ फाँसिक तरुआरि
युधिष्ठिरक थिरता नहि चाही, चाही भीमक बाँहि प्रचण्ड
जरासन्ध ललकारि रहल कय दी पापी कैं खण्ड-पखण्ड ॥

पीन चीन केर लाल मोसिसँ प्रखर कृपाण कलम सँ
भारत भूमिक पुण्यक वलपर दुर्जय बाहुक बल सँ
चौहानक सम्पादकत्वमे सीमाक छापाखाना मे
छपा देखाबी नव अभिनय ई विश्वक नाटक शाला मे।

आह्वान

जाग रे कुलीन पूत लीन स्वप्नगान मे
शोर छौ करैत मा, कनैत बात मान रे ॥
स्वभूमि शस्य-श्यामला हँसोथि लेत दुष्ट रे
अमल कमल सुनील सुभग तोड़ि कै सुखौत रे ॥
प्रिय स्वतन्त्र मन्त्र गीतिकाक गीत गाबि रे
गौतमेक ज्ञानसँ हटा घनान्धकार रे ॥
छौ अबैत वन प्रदेशसँ मलय समीर रे
छौ कहैत जाग देश केर शूर वीर रे ॥
भास्करक किरण प्रताप देत तोर अंग रे
छोड़ि दैह सुख विलास कामिनीक संग रे ॥
घनन घोर घोषसँ घटा एलै अकास रे
कापि रहल छै जमीन जीव जनक साँस रे ॥
गति नवीन वीण मे प्रवीण लय सुनौत रे
झनझनाय तार झंझवातकेँ हकार रे ॥
रक्तपुष्पसँ सजा समस्त पंथ वीर रे
पोछि दे प्रतापसँ कनैत माक नीर रे ॥

चीनक दुःस्साहस

निकसि कऽ चन्दन सँ ई आगि
जराबै जल थल ओ आकाश,
सुनू ओ कोमल मलय बसात!
क्रुद्ध भऽ बनू शीघ्र तूफान।
मचलिकऽ शिखर शिखर पर दौड़ि
करू अप्पन मित्रक आहूति।
विपुल बिजुरी कड़कै स्वच्छन्द,
घुमड़ि नाचै बादरि निर्द्वन्द्व,
बज्र लऽ तत्क्षण जागथि इन्द्र;
पुरातन गरजथि बारम्बार,
करथि प्रलयङ्कर ताण्डव नृत्य,
चक्र लऽ क्रऽ हरि करथि प्रहार,
दनुज होली हो चकनाचूर,
विवशता हो मानव सँ दूर,
मिलै ओकरा शत शत धिक्कार,
करै अछि जे कुत्सित व्यवहार।

श्रीरमानाथमिश्र 'मिहिर'

पिजा चुकल छी

बीभत्स छल तरुआरि, मुदा हम पिजा चुकल छी।
काटब शत्रुक गर्दनि निश्चय सोचि चुकल छी॥
उष्ण रक्त हमरा धमनीमे होइछ प्रवाहित।
अर्पण हम सर्वस्व करब भारत रक्षा हित॥
युग-युगसँ अछि आइ हमर ई खड्ग पियासल।
शत्रुक गर्दनि काटि ओकर हम भरब हियातल॥
जागल अछि पुरुषत्व हमर नहि सेज सुतल छी।
स्वर्ग अर्गला तोड़ि भीष्म रणमे नहि चूकथु।
पाञ्चजन्य छनि हाथ कृष्ण पुनि निर्भय फूकथु॥
संचित अछि वीरत्व न छी हम कहियो हारल।
अछि इतिहास गवाही नित अरिदलकेँ मारल॥
हम अगस्त्य सन्तान समुद्रो सोखि चुकल छी।
चण्डिक रूप बनाय आइ सीता पुनि आबथु।
शत मुख रावण मारि सुरक्षित नैहर राखथु॥

राम करथु विश्राम शत्रुकेँ सीता मारल ।
बूझत की पुरुषत्व जखन नारी सँ हारल ॥
मातृभूमि रक्षार्थ तुच्छ थिक सोना-चानी ।
हम दधीचि सन्तान अस्थिकेर छी नित दानी ॥
विश्वक सोझाँ ज्ञान दीप हम पहिने बारल ।
देवासुर संग्राम भेल तँ दानव हारल ॥
जय-जय भैरवि असुर भयाउनि गाबि चुकल छी ।
बीभत्स छल तरुआरि मुदा हम पिजा चुकल छी ।

जय घोष

छै पराजय प्रथम धूर्त चीनक तथा
छी अजय हम विजय भारतक छै यथा,
कि उगलतैहिमालयपिघलतै नया
विश्व द्रष्टा कि स्रष्टा युगक एशिया
छिः परस्वक हरण ! दुर महाचोर छै
सृष्टि भरि चीन भारी चुगलखोर छै
चीन हमलावरक ई अनर्गल भेलै
की एलै क्रान्ति शाश्वत सुमंगल भेलै ?
चीन हमलावरक सर्वथा दोष छै
आ यथा विश्व मे हिन्द निर्दोष छै
आह ! संयत निकट की उकाठी बनल
पार बान्हल परीक्षित ओ पाठी बनल
होम "वलिपशु" हेतै पूर्ण मख भागसँ
देश सेवा हमर सत्य अनुराग सँ

वाह ! जनयुक्त छै, एक स्वर गान हो
की पवन मुक्त छै, विश्व कल्याण हो
की रण मे सुभट केर पहिचान हो
चीनिएँ वा रहय की रहौ आन क्यो
चीन केर नीन टुटतै तुरन्ते तखन
मारि थापड़सँ हम कान तोड़बै जखन
भीष्मव्रत ले अमर ई समर प्राणपर
जागरण की मरण वेद कोरान पर
मध्य ज्वालामुखी पर ने रस्ता छुटै
आगि पाथर पड़ौ, किन्तु दम ने टुटै
लात केर घातसँ फोड़ि पाथर दहो
की सटा वक्ष की पुनि हटा दे मही
सामने छौ उदधि वीर हनुमान बन
जड़ जयन्ते थिकौ रामकेर बान बन
मानवक युग थिकै जनु कदम छै बढ़ल
दानवक दुष्टता छै शिखर पर चढ़ल
ढाहि गौरव दही पाठ अनुपम पढ़ा
की पसरलौ सुयश डेग ऊपर चढ़ा

सुश्री शशि 'सुषमा'

'होयत भारत केर जीत'

चुप रहु आइ कोइलिया बनकेर
त्यागू विरहक रीति
जन-जन मन-मन गाबि रहल
केवल बलिदानक गीत।

मुदै देखि रहल भारतकेँ
अछि तिलचट्टा चोर
चोरीसँ धकिआबय चाहय
भारत-भू बलजोर।

पावन भारत-भूपर उतरल
पापी ओ व्यभिचारी
विना ज्ञान आक्रमण केलक अछि
लुच्चा अत्याचारी

गाउ गीत अर्जुन ओ भीष्मक
कृष्ण, राम, हनुमानक
लक्ष्मीवाइ, शिवा, राणा ओ
गौरव गीत महानक।

गाउ गौरवक गान सुभाषक
सैन्य शक्ति अभयङ्कर
पंचम स्वरमे गाबि उठू
हर-हर शंकर प्रलयंकर।

निष्कर्ष

बनि गेलहुँ आब हम महाकाल ।
रक्तक तेजीके रोकि सकत ? फूजल केहरिकेँ टोकि सकत ?
रे चीन ! तीन दिनमे पवीण हम सत्तो तोहर लेबौ छीन ।
पेकिंग बिलमे जे छौक व्याल...
शक्तिक सशक्त हम पूत थिकहुँ । ओ विश्वशान्तिकेर दूत थिकहुँ ।
हम भारत सँ अभिभूत थिकहुँ । आ प्रेम-मालकेर सूत थिकहुँ ।
तोहर तोड़ब मायाक जाल, बनि गेलहुँ आब हम महाकाल ।
खा मुष्टि हमर रक्तक कुरड़ा करबे शीघ्रे रे आँखिगुरड़ा ।
जँऽ तकबे आँखि त फोड़ि देबौ खन्तीसँ सत्ता कोड़ि देबौ ।
गट्टा घुमायकऽ बान्हि बान्हि थापरसँ करबौ लाल गाल,
बन्दूक बाण, भाला कृपाण, अछि फाड़ बन्हल ओ ठाढ़ कात ।
सुनि शंखनाद कहि जयचण्डी, हम गाबि रहल छी समर-गान ।
ओ छी करैत बम-बम हर-हर धऽ रौद्र रूप, लऽ मुण्डमाल
सुमनक अणु पर उन्मत्त मधुप कऽ रहल विजयकेर अमर गान
ईशक आशिष लऽ तांत्रिक बनि, यात्री भऽ भऽ सभकरु पयान
ओहि दुष्ट संग सभ भऽ बहेड़ जहि तहि मारू लऽ किरणताल

श्रीशान्तिकुमारी 'सुमन'

संकेत

मौन मे आह्वान जनिकर आन मे दिनमान !
जागु भारतवर्ष केर सुतल अभय अभिमान !!
शान्त केहरिकेँ जगावय, कोन शठ शिर तानि,
हे अमर दुर्जेय ! द्रुत निज शक्तिमय फण तान
जागु भारतवर्षकेर सूतल अभय अभिमान !
शान्ति-शिव विकराल अँह नरसिंह एकाकार,
मंद्र रव-घन, तड़ित-तर्जन, वासुकी फूत्कार,
अँह परुष पौरुष भरल, ओ अश्रु अग्निक भार,
देखि ले रे चीन ! निज संघर्ष केर परिणाम !
जागु भारतबर्षकेर सूतल अभय अभिमान ।
अस्थि सभ इस्पात बनि जायत, कलम करवाल,
सहमि जा हे चीन ! जानह क्रूर केर हम काल,
हम अपन भाग्यक विधायक भारतक वरभाल,

समर्पण

यौवनकेर बज्र-विशाल बाहु छी ठोकि ठाढ़ युद्ध-स्थलमे ।
केन्द्रित भूगोल-खगोल शक्ति कै देब चूर्ण हम पल भरिमे ।
नहि तन्त्र-मन्त्रकेर माला छी हम फेरि रहल
हमरा रग-रगमे तप्त रुधिरकेर धारा अछि
अछि रोम-रोम ताण्डवकारी
उच्छ्वास ? प्रबल झंझानिल अनवामे सक्षम ।
चुटकी-बलसँ कै भस्मसात सम्पूर्ण शत्रु-समुदाय-शक्ति पलभरिमे
उद्यत नित खड्ग व्यालिनी ई
पल-पल अरि-रक्तक माङ करै
रणचण्डी कण्ठक विषम प्यास-आह्वान करै
शोणित दे, शोणित दिगदिगन्त उदघोष करै ।
उमड़ल पौरुष कसमसा रहल
कड़कड़ा रहल अछि कुलिश कवच

तानल प्रत्यञ्चा फड़कि रहल
अछि बर्माक रहल मनमे उमंग
हम प्रबल प्रभञ्जन पुञ्जवीर
रे सेनापति ! बाधा अधीर
दऽ दे तों ँ बस संकेत मात्र जननी पद प्रक्षालनक काल।
हृदयक चिर सञ्चित पूत रक्तसँ आइ करब माँ-चरण स्वच्छ
जननीक युगल चरणाम्बुज पर तन-मन जीवन यौवन अर्पण

जागल हिन्दुस्थान हमर अछि

जागल हिन्दुस्थान ।
के कहैत अछि चिन्तातुर ई थाकल भूर झमान ॥
जागल जत गिरिराज हिमालय, भारत माँ केर भाल ।
काश्मीर केशरकेर धारी, नन्दन वन सुविशाल ॥
कंकर कंकर शंकर जागल, छोड़ि छाड़ि कय ध्यान ॥
कालिदासकेर मेघ जगल अछि, विद्यापतिकेर गान ॥
रामचरित मानस तुलसीकेर, तानसेन केर तान ॥
दास कबीरा लय एकतारा गाबथि पद निर्वाण ॥
आइ जगल अछि मर्द मराठा, जागि उठल बंगाल ॥
कुमरसिंह केर वीर बिहारी, पशुपति केर नयपाल ॥
जतय पञ्चनद उमड़ि रहल अछि घुमड़य राजस्थान ॥
जतय अनेक एक बनइत अछि तोड़ि ताड़ि सब भेद ॥
आत्मा अमर शरीर मरै अछि अहरह टेरथि वेद ॥
प्रजातन्त्र केर नाद सकल थल मंगलमय वरदान ॥

भारत-रक्षा कवित्त

चीनक हुरदंग देखि, कपटपूर्ण ढंग लेखि,
विकट जंगकेँ परेखि, संगहिँ सब आबि जाउ।
रण मे टंकार मारि, छनमे लंका उजाड़ि,
जनमे शंका निवारि, विजयक डंका बजाउ॥
लंठक लग बनु बलंठ, पीयर तन छैक झंठ,
लग अबितहिँ मोकि कंठ चंठक छक्का छोड़ाउ।
मसकक अहँ झुण्ड मानि, तरहत्थिहुँ मुण्डसानि,
कुण्डक करु लाल पानि, हुण्डक भंडा फोड़ाउ॥

सट-सट-सट-सट-सटाक, छरपिटाउ फट-फटाक,
सफाचट्ट करु कटाक, झटपट सब आउ रे।
कालक झिकि लाउ झोंट, भालासँ चीरि भोंट,
माला लटकाउ मोट, बोंहू जनि भाउ रे॥

विजया पिबि बनि कराल, लोचन युगभान लाल,
जंघा पर ठोकि ताल, तोड़ू दुनु टाङ रे।
रुद्र बनि जाउ वीर, क्षुद्र भागत अधीर,
मुद्रे लखि गलत भीर, कोटि छी समाङ रे॥

चीनी चंडाल चोर, लाखो गंडा सङोर,
अंडाक न करौ जोर! झंडा हमहीं उड़ैब।
अछि ओ कंटाह जोंक, टंटा टा केर झोंक,
भोंकब डंटाक नोक, जय-घंटा गड़गड़ैब॥
एकसर हम दसक काल, चीनी सँ भरब गाल,
जल सङ दय उदर-जाल, मधुरे सँ जी जुड़ैब।
चाउ एन लाइ गूड़, माउ हुनक भाइ मूर.
लाउ भुजल चुड़ा भूर, दाँते तर कड़कड़ैब॥

हम सब पाण्डवक अंश, खाण्डव सम करब ध्वंस,
रचत जे कुकाण्ड कंस भाण्डहिमे जारि देब॥
कृष्णहिं सन नीतिमान, बलमे भीमक समान,
रणमे पार्थक प्रमान, मान अरिक झाड़ि देब॥
नीकक लग आशुतोष, नीचक लग रुद्र-रोष,
सींचत जे पौत कोष, नोचत जे मारि देब।
शंकर रहितहुँ उदार, प्रलयंकर बनी भार—
भवक लखि, भयंकरारि घमण्डहिं झमारि देब॥

मोहन रस-रंग लैत मो-हन दुश्मन कहैत,
मोह-न हम छी जनैत, लैतहिं कर शंख चक्र।
बसुलीके फेकि दूर, असुली सब सूद मूर,
जसुली धय बनल शूर, ध्रुव तनिकर काल वक्र॥
सुदर्शनहिं ज्ञान मोर, सुदर्शन कृपाण घोर,
सुदर्शनहिं भक्त तोड़, जगक अबर्यात चक्र।
कहुँ सीता-नायक हम, कहुँ गीता-गायक हम,
कहुँ क्रान्तिक दायक हम, शान्तिक दी कतहु तक्र॥

शान्तिक हम विश्वमित्र, कान्तिहुँ उज्वल चरित्र,
क्रान्तिक विकराल चित्र, भ्रान्ति हो तँ देखिजाउ।
संगी लग अन्तरंग, दंगीके करी तंग,
ढंगी लग जनि भुजंग, जंगी तरुआरि लाउ॥
कचब सकल अरिक भाल, रचब कतरि मुण्ड-माल,
नचब तखन भय कराल, देरी की ? आब आउ।
आबि रहल नर पिशाच, गाबि-गाबि करय नाच,
पाबि तुरत झोंकु आँच, जारनि-काठी जराउ॥

झप्परके साटि माटि, लप्पड़ सँ हमहि झाँटि,
खप्पड़ अरि फेकु काटि, गपड़गप्प खैत गिद्ध।
ढंगहिं ओ नहि समृद्ध, अंगहिं सबके सुसिद्ध,
संगहिं करु तकर बिद्ध, संग हमर अष्ट सिद्ध॥

उनतरि

कयने अछि सब कुकर्म, धयने अछि पथ अधर्म,
तैँ ने होइ छैक 'शर्म', फेकु नरकमे निखिद्ध ।
बनू धर्मराज आज, हनू सकल अरि समाज,
तनू, तखन चलत राज, तखने होयब समृद्धि॥

रहौ बरू रक्तबीज, कहौ हमर शक्त चीज,
गहौ जगक त्यक्त पीज, तख्त तुरत छीनि लेब ।
शक्ति हमर काली सन, बनती विकराली सन,
कहती मन खाली सन, रक्त हमहिं पीबि लेब ।
नापत कर जगक मान, काँपत भुव आसमान,
झाँपत अरिं आँखि कान, तैयो नहि छोड़ि देब ।
मोड़ब पबितहिं तड़ाक, तोड़ब तन कड़कड़ाक,
कोड़ब पोखरि फराक, सबकेँ तहिं गोड़ि देब ॥

मोन' छि राणा प्रताप, शिवाजीक शौर्य-ताप,
झाँसी रानिक कलाप, बाजि-टाप ध्यान मे ।
पृथ्वीचौहान मोन, भगतसिंह शान मोन,
नेताजिक जान मोन, अपना दरम्यान मे ॥
भारतमाताक नोर, फेरो बहि रहल जोर,
जागू भय गेल भोर, एतबो नहि ज्ञान मे ?
चटपट धय बीर वेष, झटपट लय अस्त्रशेष,
लटपट नहि करु विशेष, छूरा रखु म्यान मे ॥

नटवर ताण्डव करैत, पार्थक गाण्डिव बजैत,
'भीम'क डंटा भँजैत, जगतकेँ देखाउ फेर।
लंठा केँ मड़मड़ाय, घंटा पुनि गड़गड़ाय,
झंठा सबकेँ जराय, शान्त घर बनाउ फेर॥
भारत माताक मोन, करु प्रसन्न कोन-कोन,
अर्पित करु चानि सोन, आशिष शुभ पाउ फेर।
झन-झन-झन-झन-झनाक, टन-टन-टन-टन-टनाक,
खन-खन बाजा बजाय, विजय-गान गाउ फेर॥

श्रीसुभद्रा कुमारी पाठ्या

शठे शाठ्यम् समाचरेत्

तन-मन-धन केर साध छोड़ि
आलिङ्गन प्रेमक मोह तोड़ि
माताक अंश सँ पोषित तन
तेँ मायक हित चट करू दान।
उठु नर-केहरि दिग्गज महान
लय निज-निज करमे धनुषवान
देशक गौरव ध्रुव थिकहुँ अही
शत्रुक पालासँ करू त्राण॥
हम रामकृष्ण केर जनपद मे,
लेने छी जन्म तकर गौरव—
नहि मेटि सकय नहि न्यून होय
से बूझि सकल निज सम्मतिसँ
अत्याचारी केर हरू प्राण॥
भू-भाग हमर ई अपहृत कय
नहि चैनक वंशी बजा सकय
शठ निज शठता केर चालि सकल
केर चटगर फल ई पाबि सकय॥
संग्राम भूमि मे कूदि पकड़ि, ढाहू शत्रुक ठेसी गुमान॥
उठू नर-केहरि.........

श्रीरूपनारायण चौधरी 'अनूप'

जागू

जाग अरे युग-युग सँ सूतल भारतकेर तलवार
फेर देशकेर सुप्त प्राणमे भरु भीषण हुंकार
जागू शंकर हे प्रलयंकर ! खोलू तेसर आँखि
आसन डोला रहल अछि डाहू चीनक जनमल पाँखि
काल्हुक चेला चीनी आयल करै गुरू सँ मारि
की जानऽ गेल ई भस्मासुर शिवक भितरिया मारि
ई दोसर दुश्शासन आयल खींचय माइक चीर
की चुप्पी सधने रहि जायत कोटि बेयालिस बीर
जागू जागू सन् सन्तावनकेर 'तूफानी जोश'
जागू राणा शेर शिवाजी जागू 'नेता बोस'
भारतमाता कानि रहलि छथि बीच सभा मे ठाढ़ि
किऐ न आबहु उमड़ि रहलअछि बलिदानोकेर बाढ़ि

जुनि बूझू ई गंगा यमुना करइछ कल-कल सोर
ई चिर प्रहरी वृद्ध नगपतिक बहल आँखिसँ नोर
जागू वीर कुमर सिंह 'टोपे' जागू लक्ष्मीबाइ
जागू सोते ! गौरी ! नैहर छिना रहल अछि आइ
सुधा पिऔलहुँ बहुत विश्वके धारू आब कृपाण
जाधरि तनमे प्राण, घटय नहि तिनरंगाकेर मान
रहल पेटसँ घात लगौने कहि-कहि अमरित बोल
नहि बुझलक निरलज्जा माओ पंचशीलकेर मोल
रे भारतकेर बच्चा-बच्चा 'इस्पाती फौलाद'
डर एतबे अछि छुआ जैब हम तोँ कुकुरक 'औलाद'
तोँ नेफा लद्दाख लेलैं तँ हम पेकिंग तक जैब
चाउ-माउ तोरा छाती पर तिनरंगा फहरैब
निरपराध तिब्बतक खूनकेर बदला अबस सधैब
परशुराम हम राखि वेदके फरसा आइ उठैब
धधकि उठय आसेतु हिमालय कय प्रलयक झंकार
काँपि उठय ब्रह्मांड सप्त सागर मे उछलै ज्वार

मानव मेघ

बापू नहिं रहलौं आइ अहाँ
नहिं तँ मानैत न युद्ध कीट
हिंसाकेर धार बहाय आइ
लज्जित करितय ई पाप कीट
किंतु गड़ैत'छि हृदय मध्य
कियैं चढ़ौलक ई फूल-माल
अहाँक शान्ति समाधि पर
अधिकारी नहिंये छल तैयो।

  

रक्ताभ भेल अछि सांध्य गगन
विधवा-बहिनक सिन्दूरे सँ
फेकल उजड़ल ई सोहाग-चिह्न
अछि कानि रहल आक्रोशे सँ
श्याम वर्ण आकाश मध्य
टूटल चूड़ी अछि लटकि रहल

हिमगिरिकेँ सिहरैत देखि आइ
तरुवरक संग ई सिसकि रहल।

❀ ❀ ❀

चुप आइ अहाँ जुनि होउ आब
निश्चिन्त भेल नहिं आब रहू
युद्ध-विरामक भेरी फूँकि
धूरा अछि ओ झोंकि रहल
पंचशीलकेर माला लय
मानव मेघ अछि ठानि रहल
साम्यक पर्दा खींचि तानि
साम्राज्यवाद अछि ढाहि रहल
तैं हे भारतकेर भ्रातृ-वृन्द
भारत माताकेर फुल्ल कमल
कैलाश देशमे जाय अहाँ
शंकरक त्रिशूल लय चलू अहाँ
बापूक आत्माकेर शांति हेतु
बलिदान दिअऽ माताक हेतु
स्कन्दगुप्त सन होइ अहाँ
एक बेर फेर चीनारि आइ
चूर्ण करू तम अहंकार
ओ सर्प-शिशुक कप्पार आइ।

छेहतरि

देश गीत

हे भारतक नारी,
अबोध मैथिलानी,
बंद करू विद्यापति क प्रणय-गीत
राधाक मान
ललिताक शृंगार
शुरू करू प्रयाण-गीत
ढारू नहि अमंगल अश्रु
मंगलमय क्षणमे ।
सोचयकेर समय नहिं
बलिदानक वेला मे
राष्ट्रक महान मुक्ति-पर्वक
खेलमे
एकक प्रश्न नहिं
करुणामयी ! नोर पोबि जाउ
कठिन क्षण परीक्षाकेर
फेर ई विकल्प केहन ?
विदा करू गृह-स्वामीकेँ
रण-स्थलमे
चीनी शत्रुकेँ भूजक लेल

श्रीरामचन्द्र 'मधुकर'

शान्तिपाठ की करैत छी ?

उठैत जाउ भारती स्वतंत्रता पुकारि रहल
प्राणदान दैत जाउ माय परचारि रहल
तरुण युवक, नारि वृन्द सिंह गर्जना करू
भगाउ हीन चीनकेँ प्रचण्ड तर्जना करू
भारतीक लाज ताज चीन आइ छीनि रहल
सञ्च मञ्च की लखी ? की देशवीर हीन बनल ?

पुराण मे बखान अछि अहींक मानकेर लिखल
रावण समस्त विश्व जीतिकेँ विदेहसँ लड़ल
मिथिलाक लाज मान लय विदेह कैल सामना
परास्त पाबि कै घुमल सकल न देखि कामना
से मातृभूमिकेर रुधिर पिबैत की लखैत छी ?
कोटि-कोटि मैथिलो जिबैत की देखैत छी ?

खेद की बिसरि गेलहुँ प्रतापकेर मानकेँ
गनल न मातृभूमि हेतु राजपाट-प्राणकेँ
स्वतंत्रताक फेरमे घुमल पहाड़ वन भुखल
घास पातपर गुजर तदपि गुलाम नहिं बनल
तनिक सखा कहाय हीन चीनसँ डरैत छी ।
निरस्त हाथ जोड़ि शान्ति पाठ की करैत छी ॥

श्रीकपिलदेवराय 'प्रभाकर'

प्रणय

पन्द्रह बरखकेर, कनिञा दुलारी
बड़ यतनसँ साधनासँ
महायातनासँ
अमर बलिदानक आहुतिसँ
शोणितसँ दीप लेसि
नोरसँ धरती पटाय
धरतीक धर्म माता भारत
पाओलि राजदुलारी
सुकुमारि बेटी स्वतंत्रता।
दुइ सय बरखक उपरान्त
शान्तिसँ सूतल छल
नेना सब
प्रगति पथपर बढ़ि रहल छल।
सम्पूर्ण विश्वमे
प्रगतिकेर एकटा
प्रणय बनि रहल छल
भारतीय जनमे जागरण आबि गेल

माय सूतलि छलि
नेनाक संग
स्वतंत्रताक बेटीक संग
अखण्ड निद्रामे ।
खट्···खट्
पूर्व द्वारपर शब्द भेल ।
केओ आबि रहल अछि
मित्रताक प्रपंच दऽ
ठकि रहल अछि
कगना करसँ
छीनि रहल छल
जाग भेल, चोर सब भागि गेल
माय अपन व्यथा नहि बाजलि ।
चोरबा डाकू बनि आयल
दल बलक संग
बस गोल छोड़ैत ।
हाहाकार मचल भारतभूमिपर
माय ठोंहि पाड़ि कऽ कानि उठलि ।
नेना मे हरकम्प मचल
नेफामे शब्द भेल
लहाखक धरती कांपि उठलि
बमकेर नाद

दौड़ जवान मैथिल सुजान,
हिन्दू-मुसलमान
सिख-पठान मजदूर-किसान
दिऔ रक्तदान, धनदान, आभूषणदान
प्राणदान आ बलिदान ।

स्वतंत्रताक मूल्य अमूल्य
बापूकेर धरोहर शोणितक निशान
दऽ गेल सुभाष हमर प्राण ।

ई आजादी मातृभूमिक
प्रणय एक
हमरा धरतीपर
ई बइमनमा ई दुश्मनमा
हमरासँ मारि करय
विश्वमे कतहुँ नहि रहत ।
बुद्धकेर धरतीपर
अपना गुरुकेर जन्मभूमिपर
ओ अस्त्र-शस्त्र लऽ
आबि रहल अछि ।
भस्म हैत ओ ध्वंस हैत
जखन नेत्र खुजत तृतीय हमर ।

श्रीमतीनृत्यवतीदेवी

संकल्प

हम भारतक वीरांगना डटि करब शत्रुक सामना
ने रुकब हम ने झुकब हम
काज अछि ओ कोन जकरा अपन बल नहि कै सकब हम
मोन अछि ओ दिन जखन लाखो हुतात्मा बनि गेला
स्वाधीनता सौभाग्य बूझब नारि गण सँ कहि गेला
आइ से स्वाधीनता लूटै चलल अछि चीन ई
सुनु राक्षसक सन्तान लै नहि काज थीक नवीन ई

धिक्कार थिक ओहि कान कें देशक पुकार सुनै न जे
लड़ि कै मरक हित देश पर शत्रुक समक्ष तनै न जे
बनब हम काली कराली सत्य बात कहैत छी
नहि जाय देब स्वतन्त्रताकें से शपथ हम लैत छी
मोह नहि पुत्रक करब, चूड़ी समर्पित हम करब
संकल्प नृत्यवतीक शत्रुक वक्ष पर निज पद धरब

श्रीसुदर्शनचौधरी

सुनू

सुनू भारतवर्षक सन्तान
देशपर संकट आयल महान
चलू लेबै वा देबै प्राण
दूनूमे हैत अपन कल्याण ॥१॥

जितब तँ करत जगत गुनगान
मरब तँ पैब मोक्ष पद दान
रहत जा बच्चा धरी केर प्राण
सहब नहि ताबत तक अपमान ॥२॥

एखन तँ बहुतो थिकहुँ जवान
चलू चलि डटि कै कसी कमान
जतऽ अछि मेकमोहन परमान
ओतऽ चलि देखू अपन सिमान ॥३॥

रहल ई सब दिन धर्म स्थान
छला जत राम कृष्ण हनुमान
हृदयमे सतत रहै ई ध्यान
भगायब पकड़ि दुष्टकेर कान ॥४॥

तेरासी



मिथिला रिसर्च सोसाइटी

लहेरियासराय, दरभंगा

देसिल बयना सब जन मिट्ठा
ते तैसन जम्पओ अवहट्ठा
(Mahakavi Vidyapati)

Mithila Research Society has undertaken initiative of digitalization of rare and classical literary and research works in Maithili for readers and researchers. This is purely an attempt to preserve and popularize great works in Maithili for present and future generations to know their rich literary treasures. Art and literature shape a civilization. Mithila a cradle of learing has a glorious literary tradition right from Jyotirishwar Thakur and Mahakavi Vidyapati (medieval age) to Chanda Jha (pre independence era) to modern age.

There is an exhaustive list of author, poet, playwright, critic and likes who chiseled Maithili literature into a great mosaic. Contribution of legends like Abhinav Vidyapati Bhavpritanand Ojha, Pandit Surendra Jha Suman, Kashikant Mishra Madhup, Kanchinath Jha 'Kiran', Ramcharitra Pandey 'Anu', Radhakrishna 'Baher', Yadunath Jha 'Yaduvar', Chhedi Jha 'Madhup', Pulkit Laldas 'Madhur', Deenbandhu Jha, Janardan Jha 'Jansidan', Murlidhar Jha, Jeevan Jha, Kavivar Sitaram Jha, Upendranath Jha' Vyas' Mahamahopadhyaya Umesh Mishra, Harinandan Thakur 'Saroj', Jagdishwari Prasad Ojha, Umapati Tiwari, Mahamahopadhyaya Madhusudan Ojha, Dr Sir Ganganath Jha, Mahamahopadhyaya Parmeshwar Jha, Mahamahopadhyaya Mukund Jha Bakshi, Ayodhyay Prasad Khatri, Nayayacharya Anand Jha, Umanath Jha, Tantranath Jha, Munshi Raghunandan Das, Ramdeo Srivastava, Sahdeo Srivastava, Bindeshwar Mandal, Jagdish Prasad Karna, Girindra Mohan Mishra, Brajnandan Thakur, Kalikumar Das, Subhadra Jha, Harimohan Jha, Babu Bholalal Das, Dinanath Pathak, 'Bandhu', Shailendra Mohan Jha, Babuaji Jha Ajnat, Ramanath Jha, Fazul Rahman Hashmi, Ishnath Jha, Mayanand Mishra, Chandrabhanu Singh, RC Prasad Singh, Ramdeo Bhabuk, Dr Ramdeo Jha, Jaikant

Mishra, Krishnakant Mishra, Pandit Chandranath Mishra Amar, Pandit Govind Jha, Dr. Ramdeo Jha, Ramkishore Jha 'Vibhakar', Dr Ratneshwar Mishra, Ravindranath Thakur, and other can't be forgotten. They dedicated their life to enrich Maithili literature with their outstanding literary creations. Many died unsung despite producing some of the best literary works and sadly they were forgotten. They selflessly devoted their life to serve Mithila and Maithili and bestowed upon us a rich heritage.

It was widely felt that books in Maithili are not widely available despite their huge demand by readers. Even outstanding literary works became rare due to lack of reprint.

Mithila Research Society is trying to bridge the gap by collecting and converting them in digital form. Mithila Research Society clarifies that this is purely a non-commercial undertaking hence any commercial use of the books is prohibited.

Mithila Research Society was established in 1905 by great poet Chanda Jha along with others. The organization was named as (Mithila Tatva Vimarshini (Mithila Research Society) to promote and preserve culture and literature of Mithila and Maithili besides promotion of teaching and learning of Sanskrit and Maithili, research and printing of popular texts of Mithila, research and publication of books related to history of Mithila

Pandit Chetnath Jha, Babu KC Mishra, Mukund Jha Bakshi, Pandit Gannath Jha, Munshi Raghunandan Das and Babu Tulapati Singh were on forefront along with Chanda Jha. Mahamahopadhyaya Parmeshwar Jha had written history of Mithila named as Mithila Tatva Vimarsha on request of Mithila Research Society. But the organization despite abundance of energy an dedication and hundreds of scholars deeply involved with the activity of the association could not flourish due to lack of desired support from society to an extent that people started calling Mithila Research Society as Murda Club; a dead organisation. That was a huge loss for Mithila.

But the organization was revived around year 1965 ~~1961-62~~ by Dr Ramdeo Jha under guidance of his senior Shailendra Mohan Jha. So far by the mid of year 2018 Mithila Research Society published over 150 books of Maithili literature and regularly undertakes activities for promotion of Maithili. Dr Ramdeo Jha is heading this institution assisted by Shankardeo Jha.

Vijay Deo Jha
9470369195
8877213104
vijaydeojha@gmail.com

॥ श्री ॥



॥ बिज्ञापन ॥



मिथिलारिसर्चसोसाइटी

सम्यगुद्योगशीलस्य सहायः
स्वयमीश्वरः ।

१ दरभङ्गामें एक सभा 'मिथिला रिसर्च सोसाइटी' (मिथिला तत्व विमर्षिणी) नामक लग भग डेढ़ वर्ष सँ अछि । (१) संस्कृत विद्याक पठन पाठन बढ़ायब; (२) मैथिल वा अन्यकृत ग्रन्थ जे मिथिलामें प्रचलित अछि तंकर अन्वेषण ओ मुद्रित करब; मिथिला देश ओ मैथिल विद्वान् ओ अन्य विशिष्ट लोकनिक यथार्थ इतिहास लिखब; (४) मिथिलाक ऐतिहासिक स्थान ओ वस्तुसभक अन्वेषण ओ यथा साध्य जीर्णोद्धारक चेष्टा करब, (५) देशाचारानुसार आओर आओरो विषयक उन्नति करब, उक्त सभाक उद्देश्य छैक । एकर निर्वाह सकल साधारणक सहाय व्यतिरेक सम्भव नहिं । रिसर्च सोसाइटीक प्रार्थना जे मैथिलभ्रातृगण स्वोन्नतिमें प्रवृत्त होथि, परस्पर सहायता करथि, उपसभा नियुक्त कय रिसर्च सोसाइटीक साहिय करथि ।

२ एहि वर्ष इहो विचार भेलअछिजे एहि सभाक द्वारा निरंतर पूर्वक प्राचीन दुर्लभपुस्तक मुद्रित कयलजाय । एक दुइ व्यक्ति अपना अपना द्रव्यसँ पुस्तक छपयवापर उद्यतछथि। ओ एहिसभाक द्वारा छपाओलजायत । परन्तु एक दुइ व्यक्तिक साध्य एहनभारी कार्य नहिं, एकर तीनि उपाय छैक—